जनवरी , 2023, वर्ष : 44 अंक : 01

www.indiatibet.net

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

तिब्बत देश

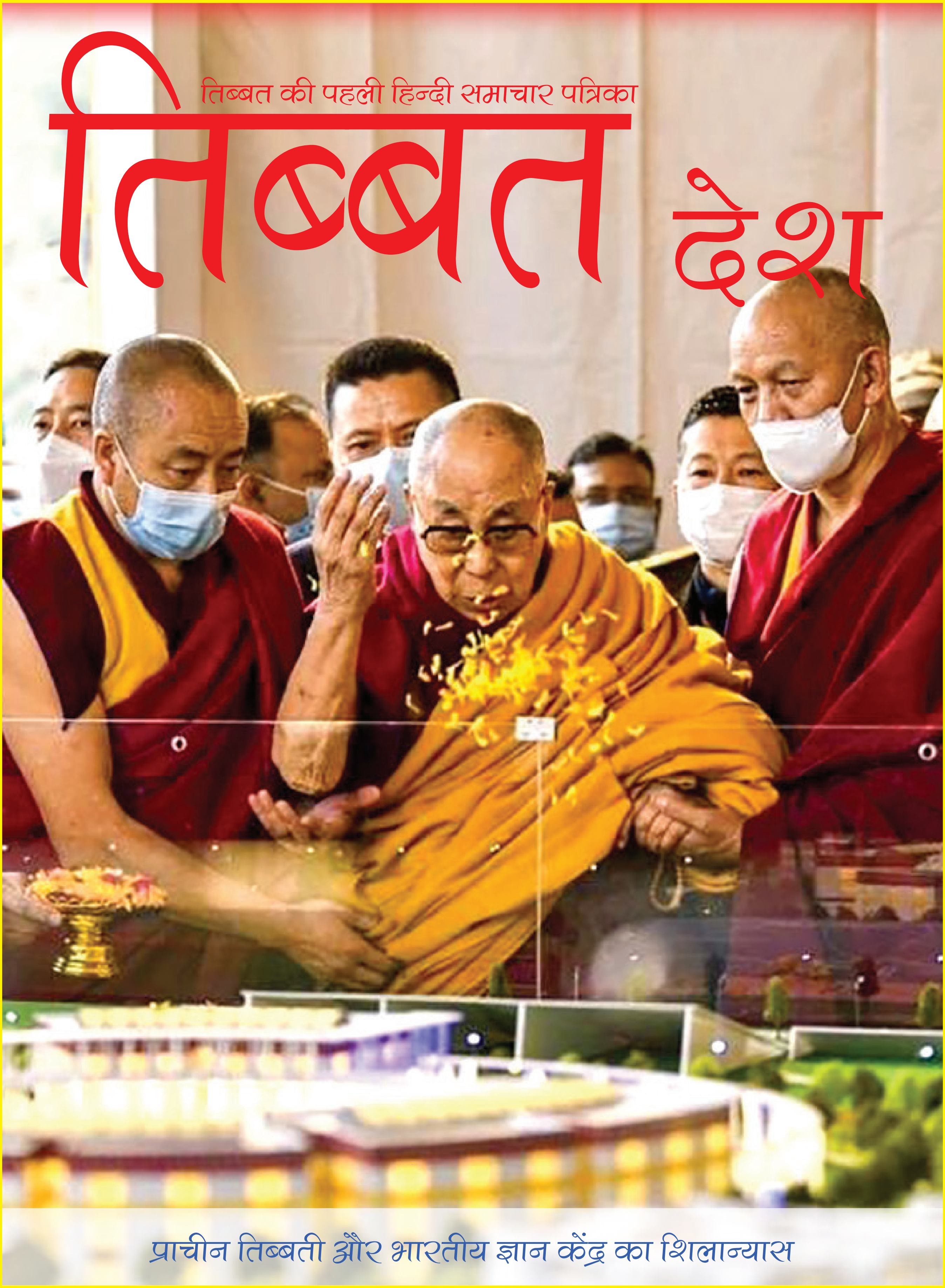

प्राचीन तिब्बती और भारतीय ज्ञान केंद्र का शिलान्यास

मूल्य :10 रु , वार्षिक : 100 रु

तिब्बत देश

जनवरी, 2023, वर्ष : 44 अंक : 01

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथो में

प्रधान संपादक
जमयंग दोरजी

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
तेनजिन जोरदेन, ताशी देकि

वितरण प्रबंधक
छोन्यी छेरिंग

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचरों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

सीटीए ने भारत का ७४वां गणतंत्र दिवस मनाया

समाचार -

• दलाई लामा प्राचीन तिब्बती और भारतीय ज्ञान केंद्र का शिलान्यास 1
• अमेरिकी प्रतिनिधि सभा के स्पीकर केविन मैककार्थी और डेमोक्रेटिक माइनॉरिटी लीडर हकीम जेफ्रीज़ को जीत की बधाई 2
• टीएन चतुर्वेदी स्मृति व्याख्यान में उद्घाटन भाषण 3
• सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने कोलकाता के साल्ट लेक में 'तिब्बत में मानवाधिकारों के उल्लंघन' विषयक संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित किया 4
• तिब्बती आईटी पेशेवरों का सम्मेलन धर्मशाला में पहली बार आयोजित 5
• संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञ तिब्बत में चीन की व्यवस्थित आत्मसात नीति को लेकर 'गंभीर चिंतित' 6
• दुनिया भर के शहरों में 'आर्ट ऑफ होप बाय द परम पावन दलाई लामा' की होर्डिंग लगाई गई 7
• डिप्टी स्पीकर ने पूर्व केंद्रीय मंत्री शरद यादव के निधन पर शोक व्यक्त किया 8
• जापानी भिक्षु सम्मेलन ने परम पावन दलाई लामा के पुनर्जन्म में दखल देने के लिए चीन की निंदा की 9
• सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने न्यूजीलैंड के नवनिर्वाचित प्रधानमंत्री क्रिस हिपकिंस को बधाई दी 10
• सीटीए ने भारत का ७४वां गणतंत्र दिवस मनाया 11

समाचार -

• धर्मशाला में आयोजितभारत के ७४वें गणतंत्र दिवस समारोह में टीपीआईई के उपाध्यक्ष और स्थायी समिति के सदस्य शामिल हुए 12
• डिप्टी स्पीकर डोल्मा छेरिंग तेखंग ने चेक गणराज्य के निर्वाचित राष्ट्रपति महामहिम पेट्र पावेल को बधाई दी 13
• लॉकडाउन समाप्त होने के बाद तिब्बत में कोविड जनितमौतों में वृद्धि अधिकारियों द्वारा तिब्बती क्षेत्रों में आवागमन और सभाओं पर प्रतिबंध समाप्त करने के बाद मृतक संख्या बढ़ी 14
• अधिकारियों ने बीमार तिब्बती व्यवसायी के परिवार को जेल में उनसे मिलने से मना किया उम्रकैद की सजा काट रहे दोरजी ताशी से मिलने के लिए आए उनके भाई नेअधिकारियों से गुहार लगाते हुए वीडियो पोस्ट की 15
• तिब्बत की खबर प्राप्त करने में चीनी बाधाएंपहले से कहीं अधिक कठिन 16
• अस्पतालों, चिकित्सा केंद्रों तक पहुंच पर प्रतिबंध के कारण तिब्बत में कोविड जनितमौतों में वृद्धि 17
• निर्वासन में रह रहे लोगों से संपर्क करने परचीनी अधिकारियों ने तिब्बती लेखक को हिरासत में लिया चीन में तिब्बतियों को निशाना बनाने वाली कड़ी कार्रवाई में३० वर्षीय व्यक्ति को हिरासत में लिया गया 18
• भारत-तिब्बत समन्वय संघ ने अपना दूसरा स्थापना दिवस मनाया 19
• गोवा विश्वविद्यालय के छात्रों ने तिब्बतियों के इतिहास और संस्कृति का अध्ययन करने के लिए बायलाकुप्पे तिब्बती बस्ती का दौरा किया 20

मुद्रक एवं प्रकाशक जमयांग दोरजी द्वारा प्रेम गुलाटी , डोली ऑफसेट प्रिंटर्स , डी -१५२ , एफ. एफ. सी. ओखला , नई दिल्ली -११००२० से मुद्रीत

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत - तिब्बत समन्वय केन्द्र की वेबसाइट www.indiatibet.net
Email: indiatibet7@gmail.com

21
• आईटीएफएस के मैसूरु चैप्टर ने अपने दृष्टिकोण को सुदृढ़ किया

अपनी बात ❖

सराहनीय है भारतीय राष्ट्रीय समारोहों में तिब्बतियों की भागीदारी

निर्वासित तिब्बत सरकार एवं विश्वभर में फैले तिब्बती समुदाय द्वारा भारतीय राष्ट्रीय समारोहों में उत्साहपूर्ण भागीदारी से भारत-तिब्बत संबंध लगातार मजबूत हो रहे हैं। भारतीय गणतंत्र दिवस का निर्वासित तिब्बत सरकार द्वारा आयोजन इसी का सराहनीय उदाहरण है। अभी 26 जनवरी, 2023 को तिब्बत के सिक्योंग (राज्याध्यक्ष) पेंपा छेरिंग ने भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को फहराया और हम सभी भारतीयों को गणतंत्र दिवस की बधाई दी। ऐसे आयोजन से संपूर्ण तिब्बती समाज में नई ऊर्जा प्राप्त होती है और वे पुनः आश्वस्त होते हैं कि तिब्बती संघर्ष भी उन्हें गणतंत्र दिवस का अवसर शीघ्र प्रदान करेगा। इस विश्वास का मूल आधार है तिब्बती समाज का लोकतंत्रीकरण। चीन के अवैध नियंत्रण के बावजूद तिब्बती जनता लोकतांत्रिक तरीके से मताधिकार का प्रयोग कर अपनी सरकार का निर्वाचन कर रही है। परम पावन दलाई लामा, जो कि पहले तिब्बत के राजप्रमुख थे, अपने सभी राजनीतिक अधिकार इसी लोकतांत्रिक तरीके से निर्वाचित तिब्बत सरकार को सौंप चुके हैं। वे स्वयम् को सिर्फ आध्यात्मिक कार्यों तक सीमित किये हुए हैं। भविष्य में भी तिब्बत का राजप्रमुख जनता द्वारा ही निर्वाचित होगा, जो कि तिब्बत के गणतंत्र अर्थात् रिपब्लिक होने की महत्वपूर्ण शर्त है।

बौद्ध धर्मगुरु दलाई लामा का प्रामाणिक मत है कि प्राचीनकाल से भारत लोकतंत्र और गणतंत्र का केन्द्र है। समस्त विश्व, विशेषकर तिब्बत को इसकी शिक्षा यहीं से लेनी है। भगवान् बुद्ध के विचार भारत से तिब्बत पहुँचे थे इसीलिये वे भारत को ''गुरु'' तथा तिब्बत को ''चेला'' कहते हैं। आशा है कि बोधगया में स्थापित हो रहा ''दलाईलामा सेंटर फॉर तिब्बतन एंड इंडियन ऐंसियेंट विज्डम'' भारत-तिब्बत संबंधों को और भी मजबूत करेगा। जनवरी 2023 में अपने बिहार प्रवास के दौरान बोधगया में इस सेंटर का शिलान्यास दलाईलामा द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में भारत के कानून एवं न्याय मंत्री किरेन रिजुजु, बिहार से सांसद सुशील कुमार मोदी तथा इंडियन काउंसिल ऑफ कल्चरल रिलेसंस के अध्यक्ष डॉ0 विनय सहस्रबुद्धे की भागीदारी से स्पष्ट है कि यह सेंटर प्राचीन भारतीय तथा तिब्बती ज्ञान को भविष्य में अधिकाधिक प्रासंगिक बनाने में अति उपयोगी सिद्ध होगा।
दलाई लामा का सर्वाधिक जोर मानवीय मूल्यों की मजबूती पर है। भारतीय ज्ञान की नालंदा परंपरा में शांति, अहिंसा, करुणा, सद्भाव एवं सहयोग जैसे मानवीय मूल्यों को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। इसी कारण भारत ''विश्वगुरु'' था। ये मानवीय मूल्य पूर्णतः आध्यात्मिक और लोकतांत्रिक हैं। धर्मविरोधी नास्तिक लोगों के लिये भी ये उतना ही जरूरी हैं जितना धर्मनिष्ठ आस्तिक लोगों के लिये। दलाई लामा इनके प्रचार-प्रसार हेतु पूर्णतः समर्पित हैं। उनके कार्य को नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। उनके दीर्घजीवन हेतु गत 01 जनवरी, 2023 को इंटरनेशनल गेलुक फाउंडेषन द्वारा विशेष पूजा-प्रार्थना की गई।

दलाई लामा को पूरा विश्वास है कि विभिन्न बाधाओं के बावजूद मानवीय मूल्य मजबूत रहेंगे। ये प्रतिकूल परिस्थिति को अनुकूल परिस्थिति में बदलने की क्षमता रखते हैं। नई दिल्ली स्थित भारतीय लोक प्रशासन संस्थान द्वारा आयोजित टी.एन. चतुर्वेदी स्मृति व्याख्यान में भी उन्होंने मानवीय मूल्यों को ही जीवनमूल्य तथा विभिन्न समस्याओं का समाधान बताया। पूर्व राज्यपाल तथा भारत सरकार में नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक रहे टी.एन. चतुर्वेदी का व्यक्तित्व-कृतित्व भी भारतीय मानवीय मूल्यों से प्रेरित-प्रभावित था। उनके आचार-विचार-व्यवहार में ये कूट-कूटकर भरे हैं। ऐसे महामानव की स्मृति में आयोजित व्याख्यान में अपने संबोधन से दलाईलामा ने स्पष्ट कर दिया है कि हमारी अमानवीय सोच ही अनेक समस्याओं की जड़ है। मानवता विरोधी कार्य-व्यवहार से समस्यायें सिर्फ बढ़ेंगी।

प्राचीन भारतीय नालंदा परंपरा में निहित मानवीय मूल्यों के प्रचार-प्रसार में संपूर्ण तिब्बती समुदाय की रचनात्मक भागीदारी स्वागत योग्य है। विश्वभर में अभी 13 तिब्बत कार्यालय हैं। वे लगातार ''तिब्बतन एडवोकेसी कैंपेन'' चलाकर विश्व समुदाय को बता रहे हैं कि चीन सरकार तिब्बत में क्रूरतापूर्ण अमानवीय व्यवहार कर रही है। वहाँ मानवाधिकारों का हनन, प्राकृतिक संसाधनों की लूट एवं बर्बादी, पर्यावरण विनाष, बौद्ध केन्द्रों का विध्वंस, बौद्धों का उत्पीड़न तथा ऐतिहासिक-सांस्कृतिक स्थलों का चीनीकरण षड्यंत्रपूर्वक जारी है। साजिशपूर्वक संपूर्ण तिब्बत का चीनीकरण होने से अपने ही देश में तिब्बती उपेक्षित हो गये हैं। इसी के परिणामस्वरूप गत कुछ वर्षों में ही 150 से ज्यादा तिब्बती अपने ही हाथो अपने शरीर में आग लगाकर आत्मदाह कर चुके हैं। आत्मदाह की घटनायें विचलित करने वाली हैं फिर भी चीन सरकार की क्रूरता बढ़ती जा रही है। वह आत्मदाह के शिकार तिब्बतियों के परिजनों को प्रताड़ित कर रही है। चीन सरकार 1959 से ही तिब्बत में तिब्बती पहचान मिटाने में लगी है। कुल मिलाकर तिब्बत में मानवीय मूल्य संकटग्रस्त हैं।

तिब्बतन एडवोकेसी कैंपेन चलाकर तिब्बत में मानवीय मूल्यों को फिर से स्थापित एवं सुदृढ़ करने की मांग की जा रही है। इसके लिये विश्व समुदाय दलाई लामा एवं तिब्बत सरकार के प्रतिनिधि मंडल के साथ पुनः वार्ता प्रारंभ करने हेतु चीन सरकार को बाध्य करे। अन्तरराष्ट्रीय कानूनों, लोकतांत्रिक आदर्शों तथा मानवीय मूल्यों की धज्जियाँ उड़ा रही चीन सरकार हठधर्मिता छोड़कर तिब्बत को ''वास्तविक स्वायत्तता'' प्रदान करे जो कि चीनी संविधान और राष्ट्रीयता कानून के अनुरूप है। इससे चीन के अंदर रहते हुए भी तिब्बती लोगों को स्वषासन का अधिकार मिल जायेगा। बीच का रास्ता (मध्यममार्ग) यही है, जो कि व्यावहारिक है और तिब्बत तथा चीन के लिये समानरूप से कल्याणकारी है।

प्रो. श्यामनाथ मिश्र
पत्रकार एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय, तिजारा (राजस्थान)
मो.-9079352370, 8764060406
E-mail & Facebook: - shyamnathji@gmail.com

◆ दलाई लामा प्राचीन तिब्बती और भारतीय ज्ञान केंद्र का शिलान्यास

dalailama.com., ०३जनवरी, २०२३

बोधगया, बिहार।परम पावन दलाई लामा आज ०३ जनवरी, २०२३ की सर्द सुबह गाड़ी से मगध विश्वविद्यालय से भावी 'दलाई लामा प्राचीन तिब्बती और भारतीय ज्ञान केंद्र' स्थल के लिए निकले। वहांनामग्याल मठ के भिक्षुओं ने प्रार्थना की।वहां उन्होंने भारत सरकार के कानून और न्याय मंत्री माननीय किरेन रिजिजू, सांसद श्री सुशील मोदी, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) के अध्यक्ष डॉ. विनय सहस्रबुद्धे और आईसीसीआर के महानिदेशक राजदूत कुमार तुहिन के साथ केंद्र के लिए प्रस्तावित भवन का शिलान्यास किया। उन्होंने मंच पर अपना आसन ग्रहण करने से पहले प्रस्तावित भवनों के वास्तु मॉडल का बारीकी से निरीक्षण किया।

परियोजना के अंतरिम निदेशकतेम्पा छेरिंग ने उपस्थित सभी लोगों का अभिवादन किया और विशेष अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने घोषणा की कि परम पावन दलाई लामा के दृष्टिकोण को पूरा करने के लिए केंद्र की स्थापना की जा रही है कि यदि प्राचीन भारतीय ज्ञान, विशेष रूप से मन और भावनाओं के कामकाज के संबंध में जागरूकताको पुनर्जीवित किया जा सकता है और अधिक व्यापक रूप से प्रचारित किया जा सकता हैतो यह एक अधिक शांतिपूर्ण, अधिक करुणाशील विश्व के सृजन में योगदान देगा। उन्होंने सहयोग के लिए बिहार सरकार और भारत सरकार के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने घोषणा की कि केंद्र हर उस व्यक्ति के लिए खुला रहेगा जो तिब्बती और प्राचीन भारतीय ज्ञान के बारे में सीखना चाहता है।

हिंदी में दिए गए अपने भाषण मेंप्रो. समदोंग रिनपोछे ने याद किया कि कई साल पहले आचार्य विनोबा भावे ने भविष्यवाणी की थी कि एक समय आएगा, जब भारतीय संस्कृति दुनिया में अग्रणी भूमिका निभाएगी। उनकी भविष्यवाणी को व्यापक रूप से खारिज कर दिया गया था, लेकिन पीछे मुड़कर देखने पर ऐसा लगता है कि वे दूरदर्शी थे। रिनपोछे ने आगे कहा कि चूंकि विज्ञान और प्रौद्योगिकी से जुड़ा भौतिकवादी दृष्टिकोण दुनिया में शांति और संतुष्टि लाने में विफल रहा है, प्राचीन भारतीय ज्ञान और मूल्य इस अंतर को भर सकते हैं।

रिनपोछे ने जोर देकर कहा, 'अतीत मेंजब भारतीय विचारधाराएं कारण और तर्क पर आधारित विचारों कापरस्पर आदान-प्रदान कर रही थीं, तो वे समृद्ध थीं। तिब्बती परंपरा ने इस दृष्टिकोण को जीवित रखा है। इस केंद्र की स्थापना के साथइन परंपराओं को भारत में पुनर्स्थापित किया जाएगा।'

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की ओर से बोधगया के विधायक और बिहार सरकार में कृषि मंत्री कुमार सर्वजीत ने बात कही। उन्होंने सभा कोसूचित किया कि मुख्यमंत्री परम पावन की दृष्टि का पूर्ण समर्थन करते हैं। उन्होंने स्पष्ट कर दिया है कि वह और बिहार सरकार इस परियोजना को फलीभूत करने के लिए जो कुछ भी कर सकते हैं, करेंगे। उन्होंने बताया कि बिहार की सरकार और लोग और विशेष रूप से स्थानीय लोग इस बात के लिए आपके आभारी हैं कि केंद्र बोधगया में स्थापित किया जा रहा है।

अरुणाचल प्रदेश से सांसद केंद्र सरकार के कानून और न्याय मंत्री माननीय किरेन रिजिजूने परम पावन, शाक्य सिंहासन धारकों और अन्य सम्मानित अतिथियों के प्रति अपना सम्मान व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि जब भी वे बोधगया आते हैं और सोचते हैं कि २५०० साल पहले बुद्ध वास्तव में इस इलाके में चले थेतो उन्हें परम शांति का अनुभव होता है। यह घटना बोधगया को पवित्र स्थान बनाता है और अब परम पावन अपनी उपस्थिति से उस स्थिति को और उन्नत करते हैं। बुद्ध ने दुनिया को दिखाया कि कैसे ज्ञान प्राप्त किया जाए और हमारे समय में परम पावन भी यही कर रहे हैं।

उन्होंने कहा,'परम पावन ने भारत को अपना घर बनाया है और प्राचीन भारतीय ज्ञान के बारे में जागरूकता को पुनर्जीवित करने में मदद करने के लिए खुद को प्रतिबद्ध किया है।दुनिया भर से लोग उन्हें सम्मान देने के लिए भारत आते हैं। परम पावन भारत को गुरु और तिब्बतियों को शिष्य के रूप में संदर्भित करते हैं, लेकिन मैं कहता हूं कि वह शांति के दूत हैंजो दुनिया के गुरु हैं। मैं भारत की जनता और सरकार की ओर से उनका आभार व्यक्त करता हूं। यहां भारत में उनका हमारे बीच होना हमारे लिए सौभाग्य की बात है।'

'मैं इस प्राचीन तिब्बती और भारतीय ज्ञान केंद्र की आधारशिला रखने में भाग लेकर सम्मानित महसूस कर रहा हूं। परम पावन कहते हैं कि नागार्जुन, आर्यदेव और चंद्रकीर्ति जैसे आचार्यों द्वारा पोषित नालंदा का ज्ञान, तर्क और कारण पर आधारित परंपरा को तिब्बत में जीवित रखा गया। इसका संबंध धर्म से कम और चित्त के विज्ञान से अधिक था। इसी तर्ज पर अध्ययन के लिए एक केंद्र स्थापित किया जा रहा है। दुनिया भर के लोग यहां आकर अध्ययन कर सकेंगे।'

उन्होंने कहा,'परम पावन करुणा और सहिष्णुता, क्षमा और आत्मानुशासन जैसे मानवीय मूल्यों की प्रशंसा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने तिब्बती संस्कृति के संरक्षण और तिब्बत के प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा के लिए काम करने का संकल्प लिया है।'

'भारत सरकार बदले में इस केंद्र को सहयोग देने के लिए प्रतिबद्ध है, जो हमें अपने भीतर झांकने के लिए प्रोत्साहित करेगी। केंद्र एक विश्वस्तरीय संस्थान होगा, मानवता के लिए एक उपहार होगा, जहां मन की शांति और विश्व शांति के बीच की कड़ी को खोजना संभव होगा।'

तत्पश्चात तेम्पा छेरिंग ने परम पावन को सभा को संबोधित करने के लिए आमंत्रित किया।

परम पावन ने कहा,'आजहम सब यहां बुद्ध की शिक्षाओं के प्रति अपनेआकर्षण के कारण एकत्रित हुए हैं। हम सभी शांति की कामना करते हैं, इसलिए हमें करुणा और अहिंसा की साधना को विकसित करने की आवश्यकता है। बुद्धधर्म न केवल दुनिया को शांति और खुशी देता है, बल्कि यह हमें दिखाता है कि दुख को कैसे दूर किया जाए।'

'खुशफहमी में रहना पर्याप्त नहीं है।हमें दुख के कारणों को जानना होगा,जो हमारे आत्म-मुग्धता और विनाशकारी भावनाओं में निहित हैंऔर उन्हें समाप्त करना है। विश्व में शांति व्यक्तियों के मन में शांति होने पर निर्भर करती है।'

शांतिदेव ने अपनी पुस्तक 'बोधिसत्व के मार्ग में प्रवेश' में स्थिति को निम्न तरीके से और अत्यधिक स्पष्ट किया है-

संसार में जितने भी दुःख उठाते हैं वे अपने सुख की इच्छा के कारण ऐसा करते हैं। संसार में जितने भी सुखी हैं, वे दूसरों के सुख की कामना के कारण ही सुखी हैं। ८/१२९

अधिक क्या कहना? इस अंतर को ध्यान से देखें: मूर्ख अपने लाभ के लिए तरसता है और संत दूसरों के लाभ के लिए कार्य करता है। ८/१३०

जो दूसरों की पीड़ा के लिए अपने सुख का आदान-प्रदान करने में विफल रहते हैं, उनके लिए बुद्धत्व निश्चित रूप से असंभव है- संसार-चक्र में सुख कैसे हो सकता है? ८/१३१

इस प्रकार सुख से सुख की ओर बढ़ते हुएकौन सा विचारशील व्यक्ति रथ पर चढ़ने के बाद, उस बोधिचित्त को, जो सारी थकान और परिश्रम को हर लेता है, निराश होगा? ७/३०

परम पावन ने जारी रखा,'यदि आप सौहार्दपूर्ण हैं और दूसरों की सहायता करने के लिए दृढ़ संकल्प हैं, तो यह आपको खुशी प्रदान करेगा।इसलिए, हम बुद्ध की शिक्षाओं के लिए उनके आभारी हो सकते हैं।'

'भारत एक ऐसी भूमि है जहां करुणाऔर अहिंसाकी मौलिक और दीर्घकालीन परंपराओं के कारण, कई अलग-अलग आध्यात्मिक परंपराएं फलती-फूलती हैं। विश्व में शांति सुनिश्चित करने के लिए हमें अहिंसा या कोई नुकसान न करने की धारणा- अहिंसाको प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। तिब्बती शरणार्थी सौभाग्यशाली हैं कि वे ऐसी भूमि में रहने के लिए आ सके जो स्पष्ट रूप से अहिंसाके सिद्धांत की भूमि रही है।

मेरे पास कहने के लिए और कुछ नहीं है। मैं बिहार सरकार और केंद्र सरकार को उनके समर्थन के लिए धन्यवाद देता हूं, जिसके बिना इस परियोजना को पूरा करना मुश्किल होगा। हम उनके आभारी हैं।

हमें दूसरों के कल्याण के बारे में सोचने और निरंतर सौहार्दता का विकास करने की आवश्यकता है। दूसरों की सेवा करना हमारे जीवन का नेतृत्व करने का एक व्यावहारिक और यथार्थवादी तरीका है। धन्यवाद।'

कर्मा चुंगडक ने धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने सर्वप्रथम परम पावन के प्रति इस तिब्बती और प्राचीन भारतीय ज्ञान केंद्र की स्थापना को प्रेरित करने के लिए और आज शिलान्यास में भाग लेने के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने तिब्बत की कई आध्यात्मिक परंपराओं के प्रतिनिधियों, भिक्षुओं और भिक्षुणियों को उनकी उपस्थिति के लिए धन्यवाद दिया। अंत मेंदलाई लामा ट्रस्ट की ओर सेउन्होंने भारत सरकार का प्रतिनिधित्व करने के लिए माननीय किरेन रिजिजूऔर बिहार सरकार का प्रतिनिधित्व करने के लिए कुमार सर्वजीत और साथ ही साथ इस महान अवसर पर केंद्रीय तिब्बती प्रशासन का प्रतिनिधित्व करने के लिए सिक्योंग पेन्पा छेरिंग और स्पीकर खेनपो सोनम तेनफेल को धन्यवाद दिया।

अमेरिकी प्रतिनिधि सभा के स्पीकर केविन मैककार्थी और डेमोक्रेटिक माइनॉरिटी लीडर हकीम जेफ़रीज़ को जीत की बधाई

dalailama.com, ०८जनवरी, २०२३

बोधगया, बिहार। परम पावन दलाई लामा ने अमेरिकी प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष माननीय केविन मैककार्थी और सदन के डेमोक्रेटिक नेता माननीय हकीम जेफ़रीज़ को अलग-अलग पत्र लिखकर उनके पदों पर हाल के चुनावों में विजयी होने के लिए बधाई दी है।

परम पावन ने घोषणा की, 'मैं लंबे समय से लोकतंत्र और कानून के शासन जैसे मौलिक मूल्यों को बनाए रखने के लिए अमेरिका का प्रशंसक रहा हूं।लोकतांत्रिक दुनिया में एक प्रमुख शक्ति के रूप मेंअमेरिका आर्थिक चुनौतियों, सामाजिक मुद्दों और जलवायु परिवर्तन के मुद्दों का समाधान करके एक अधिक शांतिपूर्ण दुनिया को आकार देने में विशेष योगदान दे सकता है। अमेरिका अपने सभी नागरिकों को स्वतंत्रता और अवसर प्रदान करता है। इसने इसे आशा की किरण बना दिया है।'

'१९७९सेमुझे कई बार अमेरिका जाने का सौभाग्य मिला है और आपके कुछ पूर्ववर्ती स्पीकरों सहित अमेरिकी नेतृत्व के साथ व्यापक मुद्दों पर अपने विचार साझा करने का अवसर मिला है। मैं उन्हें तिब्बत में तिब्बती लोगों के लिए अपनी चिंता से भी अवगत कराता रहा हूं, जो मुझे विश्वास और आशा की दृष्टि से देखते हैं। अमेरिका से हमें मिले व्यापक द्विदलीय समर्थन के लिए तिब्बती लोग आपके आभारी हैं। हमारा संघर्ष हमारे लोगों को हमारी शांति, अहिंसा और करुणा की प्राचीन संस्कृति को संरक्षित रखते हुए और बढ़ावा देते हुए सम्मान के साथ जीने के बारे में है। हमारी इस संस्कृति में मानवता को समग्र रूप से लाभान्वित करने की क्षमता है।'

परम पावन ने आगे कहा, 'मेरा मानना है कि चीन में स्थिति बदल रही है और मुझे उम्मीद है कि इससे सकारात्मक बदलाव आएगा। साथ ही, मुझे आपको यह बताते हुए खुशी हो रही है कि तिब्बत में तिब्बती लोगों का दृढ़-संकल्प और भावना अदम्य है।'

अपने स्वयं के जीवन में मैं मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देने, अंतर-धार्मिक सद्भाव को प्रोत्साहित करने, तिब्बती बौद्ध संस्कृति को संरक्षित करने के लिए काम करनेऔर तिब्बत के नाजुक प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा करने के साथ-साथ मन और भावनाओं के कार्यों की प्राचीन भारतीय समझ के प्रति जागरूकता और रुचि पैदा करने के लिए प्रतिबद्ध हूं।

उन्होंने दोनों नेताओं को अमेरिकी लोगों की आशाओं और आकांक्षाओं को पूरा करने और एक खुशहाल, अधिक शांतिपूर्ण दुनिया में योगदान देने के उनके प्रयासों में हर सफलता की कामना करते हुए अपने संबोधन को समाप्त किया।

◆ टीएन चतुर्वेदी स्मृति व्याख्यान में उद्घाटन भाषण

dalailama.com, २१जनवरी, २०२३

नई दिल्ली। परम पावन दलाई लामा २० जनवरी को बोधगया से दिल्ली पहुंचे। २१ जनवरी कीसुबह वह भारतीय लोक प्रशासन संस्थान (आईआईपीए) गए जहां उन्हेंटीएन चतुर्वेदी स्मृति व्याख्यान में उद्घाटन भाषण देने के लिए आमंत्रित किया गया था। टीएन चतुर्वेदी भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के एक विशिष्ट सदस्य थे। भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक के पद से अपनी सेवानिवृत्ति के बादउन्होंने कर्नाटक के राज्यपाल के रूप में कार्य किया। चतुर्वेदी परिवार के सदस्य, आईआईपीए के महानिदेशकएसएन त्रिपाठी, नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय के उप निदेशक आर.के. मिश्रा और अन्य लोगों ने परम पावन के आगमन पर उनका स्वागत किया और उनके साथ टीएन चतुर्वेदी मेमोरियल हॉल गए।

परम पावन ने इस कार्यक्रम का उद्घाटन करने के लिए दीप प्रज्ज्वलन में भाग लिया। डीजी आईआईपीए के महानिदेशक एसएन त्रिपाठी ने उनका अभिनंदन किया, अतुलेंद्र नाथ चतुर्वेदी ने उनका स्वागत किया और आतिल नाथ चतुर्वेदी ने दर्शकों का परिचय कराया और उन्हें संबोधित करने के लिए आमंत्रित किया।

परम पावन ने अपने संबोधन की शुरुआत करते हुए कहा,'तिब्बत में बच्चे के रूप में मैंनेप्राचीन भारतीय विचारों के विभिन्न पहलुओं के बारे में सीखा। बाद में मैं एक शरणार्थी के रूप में इस देश में आया, भारत सरकार का अतिथि बना और अपना अधिकांश जीवन यहीं बिताया है। इसके बाद सेमैं करुणाऔर अहिंसाजैसे प्राचीन भारतीय विचारों के गुणों की सराहना करने लगा हूं। मैं मानता हूं कि मानवता को व्यवहार में इन अवधारणाओं की आवश्यकता है।

उन्होंने आगे कहा,'हालांकि मुझे महात्मा गांधी से मिलने का अवसर नहीं मिला, लेकिन मुझे पंडित नेहरू, इंदिरा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था और उनसे बात करने के परिणामस्वरूप मेरे मन में उनके प्रति ईमानदारी से सम्मान पैदा हुआ। भारत एक लोकतांत्रिक देश है, एक ऐसी जगह जहां धर्मनिरपेक्ष सिद्धांतों के तहत कई धार्मिक परंपराएं एक साथ रहती हैं- जो अद्भुत है।

'मेरा जीवन अब करुणाऔर अहिंसाको बढ़ावा देने के लिए समर्पित है।लेकिन मैं एक साधारण इंसान के रूप में उनके लिए अपनी प्रशंसा व्यक्त करता हूं। मनुष्य के रूप में हम सभी एक समान हैं। हम एक ही तरह से पैदा हुए हैं और हम अपनी मां की अनुकम्पा के कारण जीवित हैं। मनुष्य के रूप में करुणामय होना हमारा स्वभाव है। हम सामाजिक प्राणी हैं। हम जीवित रहने के लिए अपने समुदाय पर निर्भर हैं, इसलिए बदले में हम समुदाय का समर्थन करते हैं। विस्तार से, आज जीवित सभी आठ अरब मनुष्यों को एक साथ रहना सीखना होगा।

जब हम करुणाऔर अहिंसाके बारे में बात करते हैं तो हम अपने अंतरों के बारे में नहीं सोचते हैं, बल्कि उन तरीकों के बारे में सोचते हैं जिनमें हम समान हैं। जहां करुणाहै वहां अहिंसास्वाभाविक रूप से आती है। जब आपके भीतर करुणाहोती है, तो यह आपको आंतरिक शक्ति और आत्मविश्वास देती है और उस आधार पर आप अन्य मनुष्यों को अपने भाई और बहन के रूप में देख सकते हैं।

लोगों को 'हम' और 'उन' में विभाजित करने की बात पुरानी हो चुकी है। इसके बजाय, हमें उनके बारे में करुणाऔर अहिंसाके संदर्भ में सोचना चाहिए। यदि हम करुणाके इस अनमोल विचार को विकसित करते हैं, तो हम भय, क्रोध और घृणा से मुक्त हो जाएंगे। हम अच्छी नींद लेंगे और हमारा शारीरिक स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहेगा।

'मेरा जीवन कठिन रहा है, लेकिन कठिनाइयों ने इन गहरे आंतरिक मूल्यों को व्यवहार में लाने के अवसर दिए हैं। अपनी राष्ट्रीय, वैचारिक या धार्मिक पहचान के आधार पर केवल संकीर्ण अर्थों में सोचना मूर्खता है, क्योंकि मनुष्य के रूप में हम सभी एक समान हैं और हमें एक साथ रहना है।

जब मैं टीएन चतुर्वेदी के बारे में सोचता हूंतो मुझे याद आता है कि उन्होंने अपना जीवन करुणाऔर अहिंसाकी भावना से जिया। मैं अब ८७ साल का हूं, लेकिन मैं कम उम्र का दिखता हूं,क्योंकि मेरे मन में शांति है। फिर भीएक आकर्षक बाहरी रूप होना उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि करुणाकी आंतरिक सुंदरता को प्रकट करना।

श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर में परम पावन ने उल्लेख किया कि आधुनिक शिक्षा अपने भौतिकवादी दृष्टिकोण के साथ मुख्य रूप से पश्चिम से आई है। उनका मानना है कि यदि शिक्षा का मकसद आज लोगों को वास्तव में सौहार्दपूर्ण बनाने के लिए प्रशिक्षित करना है तो इसे प्राचीन भारतीय विचारों के आंतरिक मूल्यों के साथ जोड़ने की आवश्यकता है। भौतिक प्रगति कई लाभ लाती है, लेकिन यह लाभ आंतरिक शांति और आंतरिक शक्ति की कीमत पर नहीं आना चाहिए।

परम पावन ने टिप्पणी कीकि समय आ गया है कि केवल इस या उस राष्ट्र के बारे में ही नहीं बल्कि संपूर्ण मानवता के बारे में भी सोचा जाए। उन्होंने कहा कि २१वीं सदी मेंजलवायु परिवर्तन के परिणामों का सामना करते हुए हम केवल अलग-अलग राष्ट्रों के संदर्भ में सोचने का जोखिम नहीं उठा सकते। हमें साथ रहना सीखना होगा। ग्लोबल वार्मिंग की गंभीरता का मतलब है कि हमें इस बारे में बात करनी होगी कि हम इसके बारे में क्या कर सकते हैं और दुनिया की प्राकृतिक पारिस्थितिकी को संरक्षित करने के लिए हम क्या कर सकते हैं।

परम पावन ने सलाह दी कि जब प्रकृति की देखभाल करने की बात आती है तो हमें स्वयं को याद दिलाना होगा कि हम प्रकृति का हिस्सा हैं और हमारा जीवन प्रकृति पर निर्भर है।

जब उनसे पूछा गया कि क्या वे कभी क्रोधित होते हैं, परम पावन ने घोषणा कीकि जिस भी व्यक्ति ने शांतिदेव की पुस्तक 'बोधिसत्व के मार्ग में प्रवेश' का अध्ययन किया है और जिनकी मूल साधना करुणा है, उन्हें शायद ही कभी गुस्सा आता है।

उन्होंने इस बात से इनकार किया कि करुणामुल रूप से कमजोरी की निशानी है जो आपको दूसरों द्वारा उपहास और शोषण किए जाने के लिए खुला छोड़ देता है। उन्होंने दोहराया कि अपने समुदाय की देखभाल करना स्वयं की देखभाल करने का तरीका है। उन्होंने कहा कि तिब्बत और हिमालयी क्षेत्र के लोगों के बारे में एक बात जो वे सबसे अधिक सराहते हैं, वह है आम तौर पर उनकी एक-दूसरे की मदद करने की सौहार्दपूर्ण इच्छा।

यह पूछे जाने पर कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का सकारात्मक उपयोग कैसे किया जाए, परम पावन ने उत्तर दिया कि चाहे कितनी भी परिष्कृत मशीनें क्यों न हों, उन्हें मानव मन का अनुकरण करने के लिए अभी लंबा रास्ता तय करना है।

जब उनसे उनके आदर्श व्यक्ति के बारे में पूछा गया, तो परम पावन ने उत्तर दिया कि जिस व्यक्ति की वह वास्तव में प्रशंसा करते हैं वह महान भारतीय आचार्य नागार्जुन हैं। वह बहुत पहले हुए, लेकिन उन्होंने जो सिखाया वह यह था कि स्पष्ट रूप से कैसे सोचा जाए। वह एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अपने अनुयायियों को बुद्ध की सलाह मानने की शिक्षा दी। बुद्ध ने कहा था,'जिस तरह बुद्धिमान सोने को जलाकर, काटकर और रगड़ कर परखते हैं, उसी तरह, भिक्षुओं आपको मेरे शब्दों को परखने के बाद स्वीकार करना चाहिए, न कि केवल मेरे प्रति सम्मान के कारण।' परम पावन ने टिप्पणी की, 'मैं सभी धार्मिक परंपराओं का सम्मान करता हूँ, पर बुद्धधर्म की अनूठी विशेषता यह है कि यह हमें जांच करने के लिए प्रोत्साहित करता है।'

सभा का संचालन कर रहे आईआईपीए के रजिस्ट्रार अमिताभ रंजनने परम पावन को यह बताने के लिए धन्यवाद दिया कि करुणाआंतरिक शक्ति और चित्त की शांति लाती है। तत्पश्चात टीएन चतुर्वेदी के दूसरे पुत्र अवनींद्र नाथ चतुर्वेदी ने परम पावन को स्मृति चिन्ह भेंट किया। डॉ आरके मिश्रा ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा,'परम पावन ने करुणाके बारे में जो कहा उसे सुनने का हम सभी को सौभाग्य मिला है। आप सभी का आने के लिए बहुत- बहुत धन्यवाद।'

◆ सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने कोलकाता के साल्ट लेक में 'तिब्बत में मानवाधिकारों के उल्लंघन' विषयक संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित किया

tibet.net, ०६जनवरी, २०२३

कोलकाता। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने कोर ग्रुप फॉर तिब्बती कॉज-इंडिया के ईस्टर्न रीजन- III की क्षेत्रीय संयोजक श्रीमती रूबी मुखर्जी द्वारा आयोजित ईजेडसीसी हॉल (साल्ट लेक,कोलकाता) में आयोजित एक दिवसीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में भाग लिया। यह संगोष्ठी पीआरसी द्वारा तिब्बत में मानवाधिकारों के उल्लंघन, तिब्बत में पर्यावरण के विनाश (वनों की कटाई, अवैध खनन, बांधों का निर्माण-पानी के अधिकार का उल्लंघन), परम पावन दलाई लामा को भारत रत्न पुरस्कार से सम्मानित करने,भारत के साथ चीन की सीमा की प्रामाणिकता और कैलाश- मानसरोवर की मुक्ति पर केंद्रित थी।

०३ जनवरी को कोलकाता पहुंचने पर सिक्योंग का राष्ट्रीय संयोजक श्री आर.के. खिरमे, तिब्बती निवासियों (ज्यादातर मौसमी खुदरा विक्रेताओं) और क्षेत्रीय कोर समूह के अन्य सदस्यों ने स्वागत किया। इसके बादप्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया और रिपब्लिक टीवी चैनल ने सिक्योंग के साथ हाल के विकासशील मुद्दों पर चर्चा करने के लिए अलग-अलग विशेष साक्षात्कार आयोजित किया।

०४जनवरी कोसिक्योंग के स्वागत समारोह में पारंपरिक बांग्ला नृत्य का प्रदर्शन हुआ। इसके साथ ही एक दिवसीय संगोष्ठी का उद्घाटन हुआ। शुरू में श्रीमती रूबी मुखर्जी की परिचयात्मक टिप्पणी के बाद मुख्य अतिथि और अन्य गणमान्य लोगों को मंच परऔपचारिक तिब्बती खटग भेंट किए गए।

संगोष्ठी को संबोधित करते हुए श्री आर.के.खिरमे ने चीन द्वारा १९५९ में तिब्बत पर अवैध रूप से कब्जा करने के बाद परम पावन दलाई लामा और तिब्बती लोगों की राजनीतिक शरणार्थियों के रूप में भारत यात्रा पर प्रकाश डाला। उन्होंने पर्यावरण और राजनीतिक पहलुओं के संदर्भ में 'क्यों तिब्बत भारत के लिए इतना महत्वपूर्ण है'का सिंहावलोकन प्रस्तुत किया। उन्होंने भारत के लोगों से तिब्बत और उसके आंदोलन में शामिल होने और सहायता करने का आग्रह किया।

इसके अतिरिक्तउद्घाटन सत्र के दौरान सीटीए के संग्रह से 'तिब्बत में मानवाधिकारों के उल्लंघन'पर दो वृत्तचित्र वीडियो प्रस्तुत किए गए।

समारोह के मुख्य अतिथि सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने सभा को संबोधित करते हुए सातवीं शताब्दी से तिब्बत और भारत के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों पर प्रकाश डाला। उन्होंने देवनागरी से तिब्बती लिपियों की व्युत्पत्ति और परिणामस्वरूप भारत से निकले बौद्ध धर्म को अपनाने का उल्लेख करते हुए अपने व्याख्यान में तिब्बत को प्राचीन भारतीय परंपराओं के भंडार के रूप में याद किया।

इसके अलावाउन्होंने युवा तिब्बतियों को उनकी परंपराओं से अलग करने के लिए औपनिवेशिक बोर्डिंग स्कूलों की शुरुआत के माध्यम से तिब्बतियों के मानवाधिकारों के हनन, तिब्बतियों को रोकने के लिए ग्रिड-लॉक प्रणाली के कार्यान्वयन, डीएनए नमूनों का संग्रह और आंखों की पुतलियों की स्कैनिंग और सांस्कृतिक मुद्दों के साथ-साथ तिब्बत के भीतर असंतुष्टों के सर्वेक्षण करने जैसे चीन के दुर्व्यवहार से अवगत कराया। लगभग ८० प्रतिशत तिब्बती बच्चों को औपनिवेशिक शैली के चीनी बोर्डिंग स्कूलों में जाना पड़ता है, जहां उन्हें न तो तिब्बती भाषा और न ही तिब्बती संस्कृति सिखाई जाती है। ऐसे स्कूलों में उन्हें केवल चीनी लोकाचार में ही प्रशिक्षित किया जाता है। संगोष्ठी में चीन की 'एकल हान राष्ट्रीय पहचान की भावना को मजबूत करने' की सशक्त नीति का परिचय दिया गया,जिसका लक्ष्य तिब्बती पहचान का विनाश और उसका चीनीकरण करना है। इस नीति ने तिब्बत के अंदर तिब्बतियों को शांतिपूर्ण विरोध करते हुए आत्मदाह करने के लिए प्रेरित किया

है।

उन्होंने आगे तिब्बत में यारलुंग त्सांगपो (ब्रह्मपुत्र) पर मेगा बांधों के अवैध निर्माण के माध्यम से पीआरसी द्वारा तिब्बत में पर्यावरण विनाश के बारे में जानकारी दी गई, जिससे असम और बांग्लादेश की जल सुरक्षा को खतरा पैदा हो गया और यहां तक कि इन तटवर्ती क्षेत्रों में प्राकृतिक आपदा भी आ सकती है। २०१८में यह देखा गया था कि तिब्बत से ब्रह्मपुत्र नदी में कीचड़ भरा पानी बह रहा था, जो नदी के ऊपर के क्षेत्र में निर्माण गतिविधियों का संकेत देता है।

समाप्त करने से पहलेसिक्योंग ने तिब्बती आंदोलन और इसके कारण के प्रति उनके अथक समर्थन के लिए आयोजन टीम और भारत के लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया।

इस कार्यक्रम को बांग्ला डेली न्यूज पेपर बार्टमैन के संपादक डॉ. मानस घोष, प्रसिद्ध लेखक श्री पृथ्वीराज सेन (सर्वोच्च व्यक्तिगत पुस्तक लेखक),प्रख्यात शिक्षाविद् डॉ. नारायण चक्रवर्ती और प्रख्यात शिक्षाविद प्रो. पुलक नारायण धर ने भी संबोधित किया।

उद्घाटन सत्र के समापन के बादविभिन्न भारतीय मीडिया घरानों द्वारा सिक्योंग का साक्षात्कार लिया गया और स्थानीय तिब्बतियों के साथ संक्षिप्त बातचीत की गई।

संगोष्ठी में लगभग ३०० स्थानीय भारतीयों ने पंजीकरण कराया।इसमें आम लोग, छात्र, एनजीओ के सदस्य और स्थानीय तिब्बती लोग शामिल हुए।

◆ तिब्बती आईटी पेशेवरों का सम्मेलन धर्मशाला में पहली बार आयोजित

tibet.net, ०९ जनवरी, २०२३

धर्मशाला। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन ने अपना पहला तिब्बती आईटी पेशेवर सम्मेलन आज ०९ जनवरी से यहां धर्मशाला के प्रशासनिक प्रशिक्षण और कल्याण सोसायटी केंद्र में आयोजित किया है। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने दो दिवसीय सम्मेलन के उद्घाटन की अध्यक्षता की, जिसमें कालोन नोरज़िन डोल्मा, सचिव कर्मा चोयिंग, तिब्बती कंप्यूटर संसाधन केंद्र (टीसीआरसी) के निदेशक तेनज़िन सुल्त्रिम और मोनलम के गेशे लोबसांग मोनलम भी शामिल रहे।
वित्त विभाग के टीसीआरसी और सामाजिक और संसाधन विकास कोष (एसएआरडी) के साथ संयुक्त रूप से आयोजित इस सम्मेलन में पूरे भारत के ५० से अधिक तिब्बती आईटी पेशेवर भाग ले रहे हैं। दो दिवसीय सम्मेलन का उद्देश्य डिजिटलीकरण के प्रयासों के लिए भविष्य की रणनीति बनाना और तिब्बती समुदाय के भीतर तकनीकी विशेषज्ञता को मजबूत करना है। ताकि सीमित उपलब्ध संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग करने के लिए तिब्बती आईटी पेशेवरों का एक नेटवर्क विकसित किया जा सके। इससे सीटीए की डिजिटल परिवर्तन दृष्टि को प्राप्त किया जा सकेगा।

सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने अपने उद्घाटन भाषण मेंतिब्बती समुदाय के भीतर व्यापक सहयोग के लिए समुदाय से मौजूदा प्रतिभा और संसाधनों का उपयोग करने के बारे में अपने विचार को रखा। उनके विचार में यह व्यापक सहयोग निर्वासन में सफलतापूर्वक बनाए रखने से लेकर चीन-तिब्बत संघर्ष का समाधान तक कायम रहना चाहिए। आधुनिक प्रौद्योगिकी के तेजी से विकास के दौर में बिखरे हुए तिब्बती समुदाय के समक्ष उपस्थित चुनौतियों पर टिप्पणी करते हुएसिक्योंग ने अवसरों का लाभ उठाने और सामने की चुनौतियों से निपटने के लिए तैयार रहने की आवश्यकता पर जोर दिया।

मौजूदा सीटीए नेतृत्व विभिन्न सहयोगी भागीदारों साथ बहु-आयामी मोर्चे पर काम कर रहा है, जिनमें डिजिटल फ़्यूचर्स उसके मुख्य दृष्टिकोणों में से एक है। सीटीए ने डिजिटल तिब्बत के भविष्य की जानकारी देने के लिए दिसंबर- २०२२ की शुरुआत में पहली डिजिटल रणनीति बैठक का आयोजन किया था। इस दो दिवसीय बैठक में डिजिटलीकरण के प्रयासों को लेकर भविष्य की रणनीति बनाने के लिए सीटीए के भागीदारों और विभिन्न आईटी विशेषज्ञों ने हिस्सा लिया था। दो दिवसीय रणनीति बैठक के बाद सीटीए के डिजिटल कार्यबल समूह के लिए एक गहन दो दिवसीय कार्यशाला भी आयोजित की थी,जिसे एस्टोनिया की ई-गवर्नेंस अकादमी (ईजीए) द्वारा सभी सुविधाएं प्रदान की गई थीं। दो दिवसीय रणनीतिक बैठक में कुछ अस्थायी परिणामों की अपेक्षा की गई थी। इनमें सीटीए के लिए समुचित आईटी नीति विकसित करने, साइबर सुरक्षा को मजबूत करने और सिस्टम और प्रक्रियाओं का डिजिटलीकरण शुरू करना प्रमुख था। अन्य निर्णय में टीसीआरसी, सीटीए के आईटीअनुभागके सभी पहलुओं की क्षमता का निर्माण करने और सीटीए की आंतरिक और बाहरी दोनों सेवाओं और आईटी से संबंधित गतिविधियों को डिजिटाइज़ करना शामिल था।

कालोन नोर्जिन डोल्मा ने भारत में तिब्बती आईटी पेशेवरों की वर्तमान स्थिति को समझने के लिए कशाग के प्रयासों पर फिर से जोर दिया ताकि आईटी पेशेवरों का एक वृहत्तर नेटवर्क तैयार किया जा सके और तिब्बती समुदाय की सेवा के लिए संभावित सहयोग पर विचार-विमर्श किया जा सके।
उन्होंने कहा कि इस सम्मेलन का आयोजन करके केंद्रीय तिब्बती प्रशासन भारत में आईटी क्षेत्र में अपनी युवा क्षमता को समझने की कोशिश कर रहा है। कलोन ने कहा कि सीटीए भारत में आईटी पेशेवरों की बड़ी संख्या से वाकिफ है। हालांकि,उनके बीच पेशेवराना संपर्क की कमी प्रमुख चिंता का विषय है। सीटीए प्रशासन सुरक्षित और लचीला आईटी बुनियादी ढांचे को सशक्त बनाने और भविष्य के सहयोग को बढ़ाने के अलावा इस कमी को भी हल करना चाहता है।

सचिव कर्मा चोयिंग ने आईटी सम्मेलन में आए प्रतिभागियों के स्वागत में भाषण दिया।

दो दिवसीय सम्मेलन को यूएसएआईडी ने राष्ट्रीय लोकतांत्रिक संस्थान (एनडीआई) के माध्यम से प्रायोजित किया है।

◆ संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञ तिब्बत में चीन की व्यवस्थित आत्मसात नीति को लेकर 'गंभीर चिंतित'

tibet.net, ११ जनवरी, २०२३

जिनेवा। चीन द्वारा तिब्बती सांस्कृतिक पहचान का लगातार हो रहे दमन और व्यवस्थित नियंत्रण के आलोक में संयुक्त राष्ट्र के चार मानवाधिकार विशेषज्ञों के एक समूह ने चीन के कब्जे वाले तिब्बत क्षेत्र में 'तिब्बती संस्कृति पर कब्जे और आत्मसात करने' की नीति को लेकर 'गंभीर चिंता' व्यक्त की है।

संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञों ने चीन को संयुक्त रूप से भेजे एक संदेश में 'तिब्बती लोगों के अल्पसंख्यक अधिकार देने के विपरीत तिब्बती शैक्षिक, धार्मिक और भाषाई संस्थानों के खिलाफ दमनकारी कार्रवाइयों की शृंखला, शिक्षा के अधिकार, सांस्कृतिक अधिकार,धर्म या विश्वास की स्वतंत्रता के हनन' का मुद्दा उठाया है।विशेषज्ञों ने तिब्बत में आवासीय विद्यालय तंत्र को विशेष रूप से 'तिब्बती संस्कृति को बहुसंख्यक हान संस्कृति में आत्मसात करने के लिए बड़े पैमाने पर चलाए जा रहे अभियान' के रूप में रेखांकित किया है। यह पूरा अभियान चीन के दावों के विपरीत है। मूल रूप से ११ नवंबर २०२२ को भेजे गए संदेश को हाल ही में स्थापित प्रक्रियाओं के अनुसार सार्वजनिक किया गया था।

शिक्षा के माध्यम के तौर पर तिब्बती भाषा को हटाने के साथ ही तिब्बती संस्कृति, पहचान और भाषा के व्यवस्थित उन्मूलन, स्थानीय तिब्बती स्कूलों को जबरन बंद करने, तिब्बती भाषा और संस्कृति को पढ़ाने वाले हर निजी और स्वैच्छिक संस्थाओं को बंद करने को लेकर केंद्रीय तिब्बती प्रशासन और तिब्बती अधिकार समूहों द्वारा व्यक्त की गई चिंताओं को संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञों ने अपने संदेश में उठाया है और इन मुद्दों पर चीन से उसकी नीतियों और कार्यों को लेकर स्पष्टीकरण मांगा है। इसके साथ-साथ चीन से तिब्बती भाषा में शिक्षा देनेवाले निजी, अर्ध-निजी और राज्य वित्त पोषित स्कूलों और इनमें पिछले १० वर्षों में किए गए बदलावों के बारे में जानकारी देने के लिए कहा गया है।

१७पृष्ठों के संदेशके साथ एक अनुलग्नक संलग्न किया गया है, जिसमें अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार कानूनों का विस्तार से वर्णन किया गया है।इसमें अंतरराष्ट्रीय कानूनों में उल्लिखित अधिकारों और चिंताओं/सिफारिशों के प्रति चीन के दायित्वों को याद दिलाया गया है। ये कानून पूर्व में संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार संधि निकायों और विशेष प्रक्रियाओं द्वारा जारी किए गए थे। संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञों ने विशेष रूप से चीन को तिब्बत पर १९५९, १९६१और १९६५में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा पारित तीन प्रस्तावों-(ए/आरईएस/१३५३ (XIV), ए/आरईएस/१७२३ (XVI) और (ए/आरईएस/२०७९ (XX)) के बारे में याद दिलाया है, जिन्हें चीन द्वारा भी अपनाया गया है।

जिनेवा स्थित तिब्बत ब्यूरो के प्रतिनिधि थिनले चुक्की ने इस महत्वपूर्ण मामले पर संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञों के हस्तक्षेप का स्वागत किया है और कहा है कि 'चीनी सरकार को संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञों की मांगों को मानना चाहिए और तिब्बतियों को हान संस्कृति को अपनाने और उसे आत्मसात करने को लेकर विशेष रूप से आवासीय विद्यालयों के माध्यम से लागू की जा रही नीतियों से संबंधित विवरण प्रस्तुत करना चाहिए।'

संदेश भेजने वाले चार संयुक्त राष्ट्र विशेषज्ञों में अल्पसंख्यक मुद्दों पर संयुक्त राष्ट्र के विशेष दूत, सांस्कृतिक अधिकारों के क्षेत्र में काम करनेवाले विशेष दूत, शिक्षा के अधिकार पर विशेष दूत और धर्म या विश्वास की स्वतंत्रता का काम देखनेवाले विशेष दूत शामिल हैं।

◆ दुनिया भर के शहरों में 'आर्ट ऑफ होप बाय द परम पावन दलाई लामा' की होर्डिंग लगाई गई

tibet.net, १२ जनवरी,२०२३

लंदन। कल १२ जनवरी को स्थानीय समयानुसार २०:२३ बजे लंदन स्थित एक कला संगठन- सीआईआरसीए ने अपने २०२३ कला कार्य- 'आर्ट ऑफ होप बाय द परम पावन दलाई लामा' का प्रीमियर किया। इस अवसर पर हो रही बारिश में भी बड़ी संख्या में तिब्बतियों और समर्थकों ने उपस्थित होकर उत्साह का प्रदर्शन किया।

इस अवसर पर सीआईआरसीए के सेक्रेटरी लोचो समटेन ने कहा, हम मध्य लंदन में पिकाडिली सर्कस गोलचक्कर के क्रॉस-सेक्शन में विशाल होर्डिंग्स पर तिब्बत के परम पावन दलाई लामा से 'होप' के इस संदेश देने से बेहतर तरीके से वर्ष २०२३ का स्वागत नहीं कर सकते थे।' उन्होंने इसे शुभ घटना बताते हुए जिक्र किया कि जब स्क्रीन पर वीडियो चल रहा था तब बारिश भी रुक गई थी।

लंदन स्थित तिब्बत कार्यालय के प्रतिनिधि सोनम फ्रैसी और सचिव लोचो समतेन ने सेवॉय में प्री-लॉन्च डिनर में भाग लिया, जहां सीआईआरसीए के संस्थापक तथा कलात्मक निदेशक जोसेफ ओ'कॉनर और प्रतिनिधि सोनम ने पत्रकारों और कला लेखकों को संबोधित किया। उनमें से अनेक लोगों ने तिब्बती राष्ट्रीय ध्वज और परम पावन के दिव्य और शांत चेहरे के रंगों में खिलते हुए बिलबोर्ड को देखने के लिए पिकाडिली सर्कस की यात्रा की। प्रतिनिधि सोनम ने अपने भाषण में परम पावन दलाई लामा की अक्सर दोहराई जाने वाली सलाह- 'सर्वश्रेष्ठ की आशा करो और सबसे बुरे के लिए तैयार रहो' को उद्धृत किया। ज्ञातव्य है कि परम पावन ने ६० लाख तिब्बतियों की आशाओं का मार्गदर्शन किया है और उन्हें बनाए रखा है।

३१जनवरी २०२३तक लंदन, बर्लिन, मेलबर्न और लॉस एंजिल्स में स्थानीय समयानुसार रोजाना २०:२३बजे आर्ट वीडियो दिखाया जाएगा।

◆ डिप्टी स्पीकर ने पूर्व केंद्रीय मंत्री शरद यादव के निधन पर शोक व्यक्त किया

tibet.net, १३ जनवरी, २०२३

धर्मशाला। जनता दल-यूनाइटेड (जदयू) के संस्थापक-सदस्य व दिग्गज भारतीय राजनेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री शरद यादव के निधन पर निर्वासित तिब्बती संसद की डिप्टी स्पीकर डोल्मा छेरिंग तेखांग ने तिब्बत के लोगों की ओर से शोक व्यक्त किया है।

स्व यादव की बेटी श्रीमती सुभाषिनी राजा राव को लिखे पत्र में डिप्टी स्पीकर ने कहा, 'मैं आपके प्यारे पिता, अनुभवी भारतीय राजनीतिज्ञ, जनता दल यूनाइटेड (जदयू) के संस्थापक-सदस्य और पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री शरद यादव जी के निधन से दुखी हूं।'

उन्होंने कहा, 'एक राजनेता होने के अलावा वह पेशे से किसान, शिक्षाविद् और इंजीनियर भी थे, जो डॉ. लोहिया के आदर्शों से बहुत प्रेरित थे। तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल और मुझे व्यक्तिगत रूप से कई अवसरों पर उनसे मिलने का सम्मान मिला, जिस दौरान उन्होंने तिब्बत के न्यायोचित मुद्दे के प्रति अपनी एकजुटता दिखाई। मैं तिब्बती मुद्दे के साथ उनके अटूट समर्थन और एकजुटता के लिए श्री शरद जी के प्रति अपना आभार व्यक्त करने का अवसर लेना चाहती हूं। भारत देश और भारत के लोगों के लिए उनकी उत्कृष्ट सेवा के लिए उन्हें हमेशा याद किया जाएगा।'

निर्वासित तिब्बती संसद और तिब्बत के लोगों की ओर सेमैं परिवार के सदस्यों और उनके रिश्तेदारों के प्रति प्रार्थना और गहरी संवेदना व्यक्त करती हूं। दुख की इस घड़ी में हम आपके और आपके परिवार के साथ हैं। इस महान व्यक्तिगत क्षति को सहन करने के लिए भगवान बुद्ध आप सभी को आंतरिक शक्ति प्रदान करे।'

◆ जापानी भिक्षु सम्मेलन ने परम पावन दलाई लामा के पुनर्जन्म में दखल देने के लिए चीन की निंदा की

tibet.net, २४ जनवरी, २०२३

टोक्यो। वर्ल्ड फेडरेशन फॉर जापान बौद्ध कांफ्रेंस(जेबीसीडब्ल्यूएफ) के प्रतिनिधि और महासचिव भिक्षु मिज़ुतानी इकान तथा भिक्षु इतोह ईनिनने २४जनवरी कोजापान स्थित तिब्बत कार्यालय का दौरा किया और प्रतिनिधि डॉ. आर्य छेवांग ग्यालपो से मुलाकात की। भिक्षु मिज़ुतानी इकान ने हाल ही में जेबीसीडब्ल्यूएफकी ओर से एक बयान जारी किया है जिसमें तिब्बती लामाओं के अवतार के चयन में हस्तक्षेप करने और १४वें दलाई लामा के पुनर्जन्म का चयन करने के अधिकार का दावा करने केलिए चीन की निंदा की गई है।

श्रद्धेय मिज़ुतानी इकान ने मूल बयान जापानी भाषा में प्रतिनिधि को सौंपा और बताया कि सम्मेलन के सदस्यों ने कुछ समय पहले बैठक कर इस मुद्दे पर चर्चा की थी।

प्रतिनिधिमंडल ने कहा कि उन्हें लगता है कि धर्म में विश्वास नहीं करनेवाला कम्युनिस्ट चीनतिब्बती धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप करता रहा है। यह अब अगले दलाई लामा के चयन के अधिकार का दावा कर रहा है।

भिक्षु मिज़ुतानी ने कहा,'यह दुनिया भर में धार्मिक समुदाय, विशेष रूप से कुल बौद्धों का अपमान है। सदस्यों ने फैसला किया है कि अपना रुख स्पष्ट करने के लिए एक बयान जारी करने और चीनी अधिकारियों से अनुरोध करने का समय आ गया है कि वे तिब्बतियों को स्वतंत्र रूप से धर्म का पालन करने दें और अगले दलाई लामा के चयन में हस्तक्षेप करना बंद करें।'

प्रतिनिधि आर्य ने प्रतिनिधिमंडल को अपनी चिंता व्यक्त करने और चीनी अधिकारियों से तिब्बती धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप न करने का आग्रह करने के लिए उनकी पहल के लिए धन्यवाद दिया और उन्हें तिब्बती खटक ओढ़ाकर उनका सम्मान किया। उन्होंने कहा कि यह बयान चीनी नेतृत्व को चेतावनी देगा कि दुनिया देख रही हैऔर यह अन्य धार्मिक समूहों को भी इस तरह का बयान जारी करने के लिएप्रोत्साहित करेगा ताकि कम्युनिस्ट चीन को तिब्बती धार्मिक मामलों में दखलंदाजी से रोका जा सके।

बयान में कहा गया है, 'हमजापानी बौद्ध यहमानते हैं कि तिब्बतियों को तिब्बती बौद्ध संस्कृति और इतिहास के आधार पर दलाई लामा के उत्तराधिकारी का फैसला करना चाहिए। पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना (पीआरसी) की राष्ट्रीय नीति कम्युनिज्म हैऔर कम्युनिज्मनास्तिकता के सिद्धांत पर आधारित है। इसलिए, यह एक विरोधाभास होगा कि जो लोग धर्म में विश्वास नहीं करते हैं उन्हें यह तय करने की अनुमति दी जाए है कि देश का धार्मिक प्रमुख कौन होगा।'

श्रद्धेय मिज़ुतानी इकान ने आगे कहा कि जापान के भिक्षुओं और लोगों में परम पावन दलाई लामा और तिब्बती बौद्ध धर्म के प्रति बहुत सम्मान है। इसलिए, जापानी लोग चीनी कम्युनिस्ट नेतृत्व द्वारा नियुक्त किसी भी दलाई लामा को कभी स्वीकार नहीं करेंगे।

परम पावन दलाई लामा ने चौबीस बार जापान का दौरा किया है और सोलह बार देश का भ्रमण किया। अधिकांश यात्राएँ जापानी मठों और बौद्ध संघों के निमंत्रण पर हुई हैं। जापानी संघ के सदस्यों और आम लोगों ने प्रेम, करुणा और अहिंसा पर उनकी शिक्षाओं की बहुत सराहना की है।

◆ सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने न्यूजीलैंड के नवनिर्वाचित प्रधानमंत्री क्रिस हिपकिंस को बधाई दी

tibet.net, २५ जनवरी, २०२३

धर्मशाला। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के लोकतांत्रिक रूप से चुने गए नेता सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने न्यूजीलैंड के नव-निर्वाचित प्रधानमंत्री क्रिस हिपकिंस को न्यूजीलैंड के ४१वें प्रधानमंत्री के रूप में चुने जाने पर बधाई देते हुए पत्र लिखा।

प्रधानमंत्री हिपकिंस को संबोधित एक पत्र मेंसिक्योंग ने १९९० के दशक से कई अवसरों पर परम पावन दलाई लामा की शालीनता से मेजबानी करने के लिए न्यूजीलैंड के प्रति आभार व्यक्त किया। इसके अलावाउन्होंने तिब्बती प्रवासी समुदाय को आश्रय देने और तिब्बती मुद्दे और तिब्बती लोगों का समर्थन करने के लिए राजनीतिक और सामाजिक दोनों क्षेत्रों में समर्थन का एक मजबूत नेटवर्क बनाने के लिए न्यूजीलैंड की सरकार और लोगों को धन्यवाद दिया।

सिक्योंग ने लिखा, 'इस अवसर परमैं परम पावन दलाई लामा द्वारा प्रस्तावित मध्यम मार्ग दृष्टिकोण का लगातार समर्थन करने के लिए न्यूजीलैंड की सरकार और लोगों को धन्यवाद देना चाहता हूं। इस मध्यम मार्ग दृष्टिकोण को तिब्बत के लोगों और निर्वासित तिब्बती संसद द्वारा चीन-तिब्बत संघर्ष के अहिंसक, पारस्परिक रूप से लाभकारी और स्थायी समाधान के लिए अनुमोदित किया गया है।'

वे आगे कहते हैं, 'आपके नेतृत्व मेंहम आशा करते हैं कि न्यूज़ीलैंड तिब्बत के लिए अपने लंबे समय से चले आ रहे समर्थन की फिर से पुष्टि करेगा और वहां की बिगड़ती स्थिति को सुधारने के लिए अधिक से अधिक तत्परता से पहल करेगा।'

◆ सीटीए ने भारत का ७४वां गणतंत्र दिवस मनाया

tibet.net, २६ जनवरी, २०२३

धर्मशाला। आज २६ जनवरी, २०२३ को भारत के ७४वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने कहा, 'भारत की सरकार और लोगों की मदद और समर्थन के बिना हम आज जहां हैं, वहां नहीं होते।'

केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) ने आज इस अवसर को मनाने के लिए एक संक्षिप्त समारोह का आयोजन किया। इसमें सीटीए के वरिष्ठ नेतृत्व ने भाग लिया जिसमें कार्यवाहक मुख्य न्यायिक आयुक्त कर्मा दमदुल, सिक्योंग पेन्पा छेरिंग, उपाध्यक्ष डोल्मा छेरिंग तेखंग, कालोन थरलम डोल्मा चांगरा, कालोन नोरज़िन डोल्मा, चुनाव और लोक सेवा आयुक्त वांगदु छेरिंग पेसुर, महालेखा परीक्षक पेमा दादुल आर्य, निर्वासित १७वीं तिब्बती संसद की स्थायी समिति के सदस्य और सीटीए के वरिष्ठ सिविल सेवक शामिल हुए।

उत्सव के बाद मीडिया से बात करते हुएसिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने कहा, 'इस समारोह के माध्यम से हम सरकार और भारत के लोगों के साथ जश्न मनाते हैं और भारतीय आजादी का आनंद लेते हैं। इसी के साथ हम इनके प्रति गहरी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं।'

भविष्य में तिब्बतियों के लिए इसी तरह के उत्सव के अनुमान के बारे में पूछे जाने परसिक्योंग ने कहा, 'जैसा कि हम आज भारतीय गणतंत्र का उत्सव मना रहे हैं, हम भी तिब्बत लौटने और ऐसा उत्सव मनाने की लालसा रखते हैं,जिसमें हर तिब्बती हिस्सा ले सके और गर्व कर सके।'

◆ धर्मशाला में आयोजितभारत के ७४वें गणतंत्र दिवस समारोह में टीपीआईई के उपाध्यक्ष और स्थायी समिति के सदस्य शामिल हुए

tibet.net, २७ जनवरी, २०२३

धर्मशाला। निर्वासित तिब्तती संसद के डिप्टी स्पीकर डोल्मा छेरिंग तेखंग नेस्थायी समिति के सदस्य सांसद छेरिंग यांगचेन और लोबसांग थुप्टेन पोंटसांग के साथआज २७ जनवरी को पुलिस ग्राउंड में धर्मशाला के जिला प्रशासन द्वारा आयोजित भारत के ७४वें गणतंत्र दिवस के आधिकारिक समारोह में शामिल हुए।

इस समारोह में मुख्य अतिथि कृषि और पशुपालन मंत्री प्रोफेसर चंदर कुमारऔर मुख्य संसदीय सचिव श्री किशोरी लाल, मुख्य संसदीय सचिव श्री आशीष बुटेल, विधायक श्री केवल पठानिया एवं विधायक श्री मलेंदर राजन सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

डिप्टी स्पीकर और उपस्थित स्थायी समिति के सदस्यों ने मुख्य अतिथि प्रोफेसर चंदर कुमार और मुख्य संसदीय सचिव श्री किशोरी लाल व श्री आशीष बुटेल, विधायक श्री केवल पठानिया व श्री मलेंदर राजन को तिब्बती पारंपरिक खटक ओढ़ाया और निर्वासित तिब्बती संसद और दुनिया भर के तिब्बतियों की ओर से उनका अभिवादन किया।

◆ डिप्टी स्पीकर डोल्मा छेरिंग तेखंग ने चेक गणराज्य के निर्वाचित राष्ट्रपति महामहिम पेट्र पावेल को बधाई दी

tibet.net, ३१जनवरी, २०२३

धर्मशाला। निर्वासित तिब्बती संसद कीउपाध्यक्ष डोल्मा छेरिंग तेखंग ने आज ३१जनवरी कोचेक गणराज्य के निर्वाचित राष्ट्रपति महामहिम पेट्र पावेल को पत्र लिखकर राष्ट्रपति चुनाव जीतने पर उन्हेंनिर्वासित तिब्बती संसद और संपूर्ण तिब्बती समुदाय की ओर से बधाई दी।

डिप्टी स्पीकर ने पत्र में लिखा,'निर्वासित तिब्बती संसद और पूरे तिब्बती समुदाय की ओर सेमैं राष्ट्रपति चुनाव जीतने पर आपको हार्दिक बधाई देती हूं।'

'मुझे पूराविश्वास है कि परम पावन महान १४वें दलाई लामा और पूर्व राष्ट्रपति वैक्लेव हावेल की आजीवन मित्रता ने तिब्बत और चेक गणराज्य को बहुत करीब ला दिया है। मुझे उम्मीद है कि आपकेराष्ट्रपतिरहते चेक गणराज्य मानवाधिकारों, सच्चाई और गरिमा के मूल्यों को बरकरार रखते हुए वैक्लेव हावेल की विरासत और परंपरा का पालन करना जारी रखेगा। हम तिब्बत से चेक गणराज्य की लंबी मित्रता

और एकजुटता के लिए चेक गणराज्य के आभारी हैं।'
'मैं चेक गणराज्य के लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने की राह में आपकी सफलता की कामना करती हूं।'

◆ लॉकडाउन समाप्त होने के बाद तिब्बत में कोविड जनितमौतों में वृद्धि

अधिकारियों द्वारा तिब्बती क्षेत्रों में आवागमन और सभाओं पर प्रतिबंध समाप्त करने के बाद मृतक संख्या बढ़ी

rfa.org, ०४जनवरी, २०२३

तिब्बती सूत्रों का कहना है कि चीनी अधिकारियों द्वारा कोरोना बीमारी के प्रसार को नियंत्रित करने के उद्देश्य से लागू किए गए सख्त लॉकडाउन को दिसंबर की शुरुआत में समाप्त किए जाने के बाद से चीन के तिब्बती क्षेत्रों में कोविड जनितमौतें बढ़ रही हैं।

तिब्बत में रहने वाले एक सूत्र ने कहा कि तिब्बत की राजधानी ल्हासा में १०० से अधिक लोगों की मौत हो गई है। इस संख्या का खुलासा तब हुआ है जब पूरे चीन में व्यापक विरोध के बाद बीजिंग की शून्य-कोविड नीति के तहत प्रतिबंध को ०७ दिसंबर को हटा दिया गया।

सूत्र ने कहा, 'केवल०२ जनवरी कोही माल्ड्रो गोंगकर के द्रिगुंग श्मशान में ६४शवों का अंतिम संस्कार किया गया। इसके अलावा३० शवों का सेमोनलिंग श्मशान में, १७ का सेरा श्मशान में और अन्य १५ का तोलेंग डेचेन के श्मशान में अंतिम संस्कार किया गया।'

सूत्र ने सुरक्षा कारणों से नाम न छापने की शर्त पर बताया, 'इससे पहलेल्हासा क्षेत्र के इन श्मशानों में रोज केवल तीन से चार शवों का अंतिम संस्कार किया जाता था।'

अन्य स्रोतों ने कहा कि सिचुआन, गांसु और किंघई के पश्चिमी चीनी प्रांतों के न्गाबा, सांगचू, कार्देज़ और लिथांग क्षेत्रों में भी तिब्बतियों की मृत्यु हुई हैं।सिचुआन में न्गाबा के कीर्ति मठ में इतने सारे शव लाए गए हैं कि कुछ को गिद्धों को खाने के लिए छोड़ दिया गया था।

१० भिक्षुओं की मौत

तिब्बत के एक अन्य सूत्र ने कहा कि अकेले न्गाबा काउंटी के मेरुमा गांव में ०७ दिसंबर से ०३ जनवरी के बीच १५ बुजुर्ग तिब्बतियों की मौत हो गई थी। सूत्र ने कहा, 'लेकिन चीनी सरकार ने समय पर कोई चिकित्सा उपचार या जांच की व्यवस्था प्रदान नहीं की, जो बहुत ही चिंताजनक है।'

'हम हर दिन १० से १५ शवों को कीर्ति मठ में लाते हुए देख रहे हैं ताकि भिक्षु उनकाअंतिम संस्कार कर सकें। लेकिन पिछले चार दिनों के दौरान लगभग १० कीर्ति भिक्षुओं की भी मौत हुई हैं,जिनमें ज्यादातर बुजुर्ग या निजी स्वास्थ्य समस्याओं से ग्रस्त थे।

अन्य सूत्रों ने कहा कि मृतकों और संक्रमितों के लिए प्रार्थना करने के लिए आयोजित की गई बड़ी सभाओं में शामिल होने के बाद कई लोग बीमार पड़ गए हैं।

हर क्षेत्र प्रभावित

सिचुआन के डर्ज काउंटी में रहने वाले एक तिब्बती ने अधिकारियों के कोप से बचने के लिए नाम न छापने की शर्त पर आरएफए को बताया, 'तिब्बत में एक भी जगह नहीं है जहां कोविडनहीं पहुंचा है।'

सूत्र ने उदाहरण देते हुए कहा कि, मेरे अपने क्षेत्र मेंअब बहुत सारे लोग तेज बुखार के साथ बीमार हो रहे हैं। वहां बच्चों को टीका लगाने की अनुमति नहीं है, जो कि और भी चिंताजनक है।'

साथ ही आरएफएसे बात करते हुएडर्जके एक अन्य सूत्र ने कहा कि उनके परिवार में अब हर कोई बीमार है, कोई भी इतना अच्छा नहीं हैकि वह खाना खरीदने के लिए बाहर जा सके।

'मेरे परिवार केएक सदस्य पिछले आठदिनों से बीमार हैंऔर अभी भी ठीक नहीं हुआ है। हमें लगता है कि उन्हें कोविड है।'उन्होंने कहा किलेकिन हमारे पास परीक्षण किट या चिकित्सा सुविधाएं नहीं हैं जिससे कि हमें निश्चित रूप से इस बारे में पता चल सके।

इस बीच जब अधिकारियों ने निवासियों के आवागमन पर प्रतिबंधों में ढील दी तबन्गाबा के सूत्रों ने स्थानीय कोविड संक्रमणों में वृद्धि की सूचना दी।एक सूत्र ने कहा, 'मेरे अपने परिचितों के सर्कल मेंकम से कम ४० तिब्बती, जिनमें से कई बुजुर्ग थे, बीमार पड़ने के बाद मर गए हैं।'

सरकारी अस्पतालों से जब इस मुद्दे पर टिप्पणी करने का अनुरोध किया गया तो उन्होंने इसका कोई जवाब नहीं दिया।गांसु के सांगचू काउंटी के एक अस्पताल ने केवल इतना कहा कि उनके यहां कई कोविड मरीज भर्ती हैं।

चीन के राष्ट्रीय स्वास्थ्य आयोग ने २५दिसंबर को घोषणा की कि वह अब दैनिक कोविड मामलों की संख्या प्रकाशित नहीं करेगा। इसके बाद सार्वजनिक तौर पर यह चिंता व्याप्त हो गई कि आयोग प्रतिबंधों में ढील के बाद महामारी के प्रसार के बारे में जानकारी छिपाएगा।

◆ अधिकारियों ने बीमार तिब्बती व्यवसायी के परिवार को जेल में उनसे मिलने से मना किया

उम्रकैद की सजा काट रहे दोरजी ताशी से मिलने के लिए आए उनके भाई नेअधिकारियों से गुहार लगाते हुए वीडियो पोस्ट की

rfa.org, १८ जनवरी, २०२३

जेल में बंद एक तिब्बती व्यवसायी के भाई ने कईवीडियो पोस्ट किए हैं,जिनमें वहअधिकारियों से अपने भाई से मिलने की अनुमति देने की गुहार लगा रहे हैं।इन वीडियो में पश्चिमी चीनी स्वायत्त क्षेत्र में जेल के सामने विरोध प्रदर्शन भी चल रहा है, जहां हिरासत में रखे गए उनके छोटे भाई का स्वास्थ्य खराब है।

१३ जनवरी को सोशल मीडिया पर पोस्ट किए गए एक वीडियो मेंदोरजी छेतेन का कहना है कि चीनी अधिकारियों ने ४८ वर्षीय दोरजी ताशी से मिलने के उनके सभी अनुरोधों को अस्वीकार कर दिया है। ताशी को जुलाई २००८ में बड़े पैमाने पर तिब्बती विरोध-प्रदर्शनों के बाद गिरफ्तार किया गया था। ताशी२०१० सेतिब्बत की राजधानी ल्हासा में द्राप्ची जेल में आजीवन कारावास की सजा काट रहे हैं। उनके बारे में अधिकार समूहों और समर्थकों का कहना है कि उनपरऋण धोखाधड़ी के राजनीतिक रूप से प्रेरित आरोप लगाए गए थे।

उन्होंने कहा,‘जब मैं ०६ जनवरी को फिर से अपील करने गया, तो स्थानीय अधिकारियों ने द्राप्ची जेल की गरिमाको बर्बाद करने का मुझ पर आरोप लगाया और मुझसे माफी की मांग की।एक सुरक्षा गार्ड चाहता था कि मैं ऑनलाइन एक माफी वीडियो पोस्ट करूं।‘

एक अधिकार समूह-इंटरनेशनल कैंपेन फॉर तिब्बत के अनुसार,चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यताशी एक सफल व्यवसायी थे, जो अपनी गिरफ्तारी से पहले तिब्बत में एक लक्जरी होटल शृंखला और रियल एस्टेट कंपनियां चला रहे थे। उनकी परोपकारी गतिविधियों के लिए उनकी प्रशंसा की जाती थी। उन्होंने क्षेत्र में गरीबी उन्मूलन और आर्थिक विकास में योगदान दिया।

लेकिन मार्च २००८में तिब्बत में चीनीशासन के खिलाफ बड़े पैमाने पर विद्रोह-प्रदर्शनों के बादउन्हें तिब्बती प्रदर्शनकारियों को कथित गुप्त समर्थन और निर्वासित तिब्बती समुदाय के साथ राजनीतिकसंबंध रखने के आरोप में ‘अलगाववादी’ करार दिया गया था। अधिकार समूह के अनुसार, उन्होंने अपने पर लगाए गए इन आरोपों को बाद में अस्वीकार कर दिया था। हालांकि पूछताछ के दौरान उनके खिलाफ राजनीतिक आरोप हटा दिए गए थे, लेकिन उन्हें ऋण धोखाधड़ी मेंआरोपित किया गया और आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।

हाल के वर्षों में, अधिकारियों ने छेतेनको अपने भाई से मिलने नहीं देने के लिए बहाना बनाते हुए कोविड-१९ महामारी का हवालादिया। हालांकि,उन्होंने उन्हें वर्चुअल बैठक करनेदेने से भी इनकार कर दिया।छेतेन को पहले एक अलग मामले में छह साल की जेल की सजा सुनाई गई थी। इसी तरह उनके दो अन्य रिश्तेदारों को भी क्रमशः पाँच और दो साल की जेल की सजा सुनाई गई थी।

सोशल मीडिया पर प्रसारित एक अन्य वीडियो मेंछेतेन को ०६ जनवरी को जेल के बाहर चीनी भाषा में बोलते हुए देखा जा सकता है। इसमें वह ताशी से मिलने की अनुमति देने के लिए चीनी अधिकारियों के नामएक अपील-पत्र के बारे में बता रहे हैं।

वह कहते हैं,‘मेरा छोटा भाई जेल में एक गंभीर बीमारी से पीड़ित हैऔर हमने संबंधित अधिकारियों से उसके स्वास्थ्य की जांच करने और उसे उचित चिकित्सा प्रदान करने का अनुरोध किया है।लेकिन अधिकारियों की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई हैऔर इसलिएहम चीनीनेताओं से अनुरोध करते हैं कि वे सभी के साथ समान व्यवहार करें।‘

छेतेन ने अधिकारियों से परिवार के सदस्यों को ताशी से मिलने की अनुमति देने का भी आग्रह किया।

वीडियो में वह कहते हैं,‘हम मानते हैं कि परिवार के सदस्यों को उनसे मिलने से मना करना और हमें उनकी स्वास्थ्य स्थिति के बारे में सूचित नहीं करना देश के कानून के खिलाफ है और यह बुनियादी मानवाधिकारों का उल्लंघन है।‘

छेतेन कहते हैं,‘अगर इन परिस्थितियों में आने वाले दिनों में उनका स्वास्थ्य बिगड़ता रहता है तो द्राप्ची जेल को पूरी जिम्मेदारी लेनी होगी।‘

१९दिसंबर कोदोरजी ताशी की बड़ी बहनगोनपो क्यी,जिसे गोंटे के नाम से भी जाना जाता है, ने ल्हासा में एक अदालत के बाहर अपने भाई की रिहाई के लिए शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन किया। बाद में सुरक्षा गार्डों ने उन्हें हिरासत में ले लिया। गोनपो ने जून-२०२२में राजधानी के एक अन्य न्यायालय के बाहर भीधरना दिया था।

द्राप्ची जेलया ल्हासा जेल नंबर-१तिब्बत में सबसे बड़ा कारावास केंद्र है।यहां कुछ तिब्बती बौद्ध भिक्षुओं और भिक्षुणियों को उनकी भिन्नराजनीतिक प्रतिबद्धताओंके लिए हिरासत में रखागया है। मानवाधिकार समूह- फ्री तिब्बत- के अनुसार, यह जेल अपनी खराब स्थिति, क्रूरता और कैदियों पर अत्याचार का प्रयोग करने के लिए कुख्यात है।

तिब्बत पूर्व में एक स्वतंत्र राष्ट्र था जब तक कि उस पर आक्रमण नहीं किया गया और सात दशक से अधिक समय पहले चीन में शामिल नहीं किया गया था। आज की तारीख में चीनी अधिकारी तिब्बतियों की राजनीतिक गतिविधियों और सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान की शांतिपूर्ण अभिव्यक्ति को प्रतिबंधित करते हुए इस क्षेत्र पर कड़ी पकड़ बनाएरखते हैं।

तिब्बत की खबर प्राप्त करने में चीनी बाधाएंपहले से कहीं अधिक कठिन

अपनी मातृभूमि से समाचारों की बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहे भारत मेंनिर्वासिततिब्बतियों को सन्नाटे जैसी बाधाओं का सामना करना पड़ता है। उनका कहना है कि उनके लिए स्थिति झिंझियांग से भी बदतर है।जो लोगइस बाधा को पार करने की कोशिश करते हैं,उनकी सुरक्षा को अधिक खतरा है।

◆ ग्लोब एंड मेल के लिए जेम्स ग्रिफिथ्स

२३जनवरी, २०२३

२५ फरवरी, २०२२ को तिब्बती पॉप स्टार छेवांग नोरबू ल्हासा के बीच में स्थित पोटाला पैलेस के पास एक स्मारक पर गए। पोटाला पैलेस परम पावन दलाई लामा का आवास रहा है। वहां उन्होंने सैलानियों और राहगीरों की भीड़ के बीच अपने शरीर पर तेल छिड़क कर खुद को आग के हवाले कर दिया।

श्री नोरबू द वॉयस के चीनी संस्करण में दिखाई दिए थे। नोरबू को कथित

तौर पर तिब्बती राजधानी के एक अस्पताल में भारी सुरक्षा के बीच और चीनी मीडिया द्वारा सूचना छिपाकर रखा गया। कहा जाता है कि कुछ दिनों बाद वहां पर उनकी मृत्यु हो गई। लेकिनलगभग एक साल बाद भी २५ वर्षीय युवक के आत्मदाह और मृत्यु के बारे में बहुत कुछ रहस्य बना हुआ है।

भारत के धर्मशाला में स्थित एक एनजीओ तिब्बत एक्शन इंस्टीट्यूट (टीएआई) में एक शोधकर्तालोबसांग ग्यात्सो ने कहा, 'वह पूरे तिब्बत और यहां तक कि चीन में भी बहुत प्रसिद्ध थे।उन्होंने कम से कम सौ लोगों के सामने आत्मदाह किया। वहां पर उपस्थित सभी के पास मोबाइलफोन थे, लेकिन उनमें से किसी से कोई भी जानकारी हफ्तों तक बाहर नहीं आई।लोगों को पता था कि किसी ने आत्मदाह कर लिया है, लेकिन वे नहीं जानते थे कि वह कौनथा।'

श्री नोरबू उन लगभग १६० तिब्बतियों में से एक हैं, जिन्होंने २००९ के बाद से चीनी-नियंत्रित लेकिन नाममात्र के स्वायत्त तिब्बत में लागू की गई बीजिंग की नीतियों के विरोध में इस तरह से आत्मदाह किया है। चीनी नीतियां हाल के दशकों में तेजी से कठोर और आत्मकेंद्रित हो गई हैं। अपने प्रारंभिक उफान के दिनों- २०१२ और २०१३ में तिब्बतियों का आत्मदाह चरम पर था, जिसके परिणामस्वरूप दुनिया भर का ध्यान आकर्षित हुआ और वहां के आत्मदाह से रक्तरंजित, चित्रों और वीडियो को देखना मुश्किल हो गया था।

ऐसी घटनाएं पूरी तरह से बंद तो नहीं हुई हैं, लेकिन बहुत कम हो गई हैं। हालांकि,अन्य प्रकार के विरोध और अशांति अबभी छिटपुट रूप से तिब्बत में होती रहती है। इनमेंस्थानीय मुद्दों पर विरोध प्रदर्शन होने के अलावा कोविड-१९ जनित राष्ट्रीय चिंताजैसे मुद्दों पर भी आंदोलन शामिल हैं। लेकिनशोधकर्ताओं और कार्यकर्ताओं का कहना है कि इसकी खबरें जो पहले बाहर आ जाती थी, उसकी संख्या और मात्रा हाल के वर्षों में बहुत कम हो गई हैं। तिब्बत को पहले से कहीं अधिक कूपमंडूक या ब्लैकहोल में बदल दिया गयाहै और प्रभावी रूप से इसे वैश्विक कवरेज से बाहर कर दिया गया है। बावजूद इसके चीन का इस समय तिब्बत पर सबसे अधिक ध्यान केंद्रित है।

यहां तक कि तिब्बती पठार के उत्तर में स्थितझिंझियांग प्रांत, जहां उग्यूर और अन्य जातीय अल्पसंख्यकों का दमन और उनके व्यापक मानवाधिकारों के हनन का आरोप बीजिंग पर लगता रहा है, तुलनात्मक रूप से अपेक्षाकृत पारदर्शी और तिब्बत से बेहतर व्यवस्थाहै।

द ग्लोब एंड मेल के प्रतिनिधि ने २०१८ में झिंझियांग में बीजिंग के कथित'व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण केंद्रों' का दौरा कियाथा। बाद के वर्षों में अन्य पत्रकारों ने भी वहां का दौरा किया। इसके बाद ही वहां चल रहे चीन के वैश्विक घोटाले का पता चल पाया। इसके बाद विदेशी मीडिया को तिब्बती स्वायत्त क्षेत्र (टीएआर) का दौरा करने से प्रतिबंधित कर दिया गया। अब केवल टीएआर में विदेशी पत्रकारों के दौरे कड़े सरकारी नियंत्रण में ही हो पाते हैं। यहां तक कि अन्य प्रांतों में शामिल किए गए तिब्बती क्षेत्रों पर भीकड़ी निगरानी रखी जाती है।श्री नोरबू की मृत्यु के समय के आसपास समाचार एजेंसी- एसोसिएटेड प्रेस के एक रिपोर्टर को भीपश्चिमी सिचुआन से हिरासत में लिया गया और उन्हें वहां से निष्कासित कर दिया गया।

धर्मशालामें रह रहीं एक तिब्बती पत्रकार और शोधकर्ता पेंथोक कहती हैं कि, '२०१४से पहलेतिब्बत से जानकारी प्राप्त करना अपेक्षाकृत आसान था।लेकिन आत्मदाह की पहली लहर के बाद दमन शुरू हो गया और गैर-टीएआर क्षेत्रों में भीटीएआर के समान हीउत्पीड़न तेज कर दिया गया।ज्ञातव्य है कि १९५९ में दलाई लामा के तिब्बत से भाग जाने के बाद से धर्मशाला एक तरह से तिब्बती निर्वासित समुदाय का आध्यात्मिक और राजनीतिक दिल बन गया है।

तिब्बती लोग पहले देश के बाहर के अपने संपर्कों के साथ जानकारियों का आदान-प्रदान किया करते थे। लेकिन अब उन्हें खामोश कर दिया गया है।उनके फोन और इंटरनेट संचार पर नजर रखी जा रही है और मुखबिरों का डर बना हुआ है। अनेक तिब्बतियों की तरह एक ही नाम से जानीजानेवालीपेंथोकबताती हैं कि जब कोई सूत्र सूचनाएं लेकर आते भी हैं, तब भी उन्हें उनके द्वारा दी गई जानकारी केउपयोग केसंभावित नफा-नुकसान का आकलन करना पड़ता है,क्योंकि अक्सर 'चीनियों के लिए यह पता लगाना आसान होता है कि कौन बात कर रहा है।'

उन्होंने कहा,'मुझे इस बात की बहुत चिंता रहतीहै कि क्या होगा?यह चिंतासिर्फ सूचना देनेवाले व्यक्ति के लिए हीनहीं रहतीहै, बल्कि उनके परिवार, उनके बच्चों के लिए भी रहतीहै। इससे सूत्रों को तैयार करना बहुत कठिन हो जाता है।'

निर्वासित सरकार के आधिकारिक थिंक टैंक-तिब्बत नीति संस्थान- के निदेशक दावा छेरिंग ने कहा कि उन्हें भी अक्सर ऐसी जानकारी मिलती है जिसे वे प्रकाशित नहीं कर सकते।हालांकि यह खुफिया उद्देश्यों के लिए काफीउपयोगी होतीहै। उन्हें चिंता है कि सूचनाओं का प्रवाह और भी कम हो सकता है क्योंकि तिब्बत में जो होता है उसे प्रचारित करने का कार्य उनके जैसे पहली पीढ़ी के निर्वासितों से ही देश के बाहर पैदा हुए लोगों तक कियाजाता है।

उन्होंने कहा,'दूसरी या तीसरी पीढ़ी के निर्वासिततिब्बती पहली पीढ़ी के लोगों के स्तर का विश्वास नहीं बना सकते। उनके बीच उसी तरह का जैविक संबंध भी नहीं है। दोनों के बीच पूरी परंपरा का अंतर है।'

अतीत मेंधर्मशाला पहुंचनेवाले नए शरणार्थी स्थायी और विश्वसनीय सूचनाओं के साथ आते थे और अपने साथ वहां से संभावित सूत्रों का संपर्कभी बनाकर लाते थे। लेकिन तिब्बतियों की देश से बाहर जाने की संख्या हाल के वर्षों में कम हो गई हैऔर कोविड-१९ महामारी के दौरान लगभग पूरी तरह से खत्म हो गई है। कोविड-१९ महामारी के कारण एक अन्य प्रमुख स्रोत- व्यवसायी और व्यापारी जो नेपाल-तिब्बत सीमा पर काम करते हैं, भी कम हो गए हैं।

पेंथोककहती हैं कि खबरों के लिए सोशल मीडिया और इंटरनेट फ़ोरम जैसेओपन-सोर्स इंटेलिजेंस पर उनकाभरोसा अब तेजी से बढ़ता जा रहा है,जो शायद अब तक सेंसर की नजरों से बचे हुए हैं।

उन्होंने कहा कि जब श्री नोरबू ने आत्मदाह कियातो उनकी मृत्यु को प्रचारित करने का एक तरीका यह था कि लोग माइक्रोब्लॉगिंग साइट वीबो और अन्य सोशल-मीडिया प्लेटफॉर्म पर प्रोफ़ाइल तस्वीरों की

जगह दिवंगत गायक की ब्लैक-एंड-व्हाइट तस्वीरें लगा दिया था या परोक्ष तौर पर छिपी हुईशोकसंवेदना पोस्ट कर रहे थे, जिसमें गायक का नाम या उनकी मृत्यु कैसे हुई, इसका उल्लेख नहीं था।

पेंथोक ने कहा,'लेकिन इनमें से कुछ साइट अब बंद हो रहे हैं।'

चीनका विशाल ऑनलाइन निगरानी और सेंसरशिप तंत्र-द ग्रेट फ़ायरवॉल ऑफ़ चाइना-पिछले एक दशक में और अधिक अपारदर्शी हो गया है। अतीत में, तकनीक-प्रेमी व्यक्ति या विदेशी कनेक्शन वाले लोग नियंत्रण से बचने के लिए एन्क्रिप्टेड मैसेजिंग ऐप और वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क (वीपीएन) को डाउनलोड कर सकते थे।लेकिन अबये तेजी से मुश्किल हो रहे हैं और नए कानूनों के अनुसार जिनके उपकरणों में ऐसे सॉफ़्टवेयर पाए जाएंगे, उनको हिरासत में लिया जा सकता है या उन्हेंसंभावित मुकदमों का सामना करना पड़ सकता है।

टीएआई में डिजिटल सुरक्षा कार्यक्रम प्रबंधक तेनज़िन थायई ने कहा कि चीन में किसी के लिए सुरक्षित रूप से ऑनलाइन संवाद करना मुश्किल हो सकता है।जब लोग टेनसेंट के वीचैट जैसे ऐप का उपयोग करते हैंतो ये ऐप खुद व खुद अपने को सेंसर करते रहते हैं। इन्हें कड़े सर्वेक्षण और सेंसर के लिए जाना जाता है।

श्री थायई ने कहा,'लोग अब भी भारत में अपने परिवार के साथ बातचीत करते हैं, लेकिन वे राजनीति पर बात नहीं करते हैं।'

सूचनाओं के प्रवाह में कमी का असर दो तरह से होता है। एक तो देश के बाहर रह रहे तिब्बती अपने परिवार और घर से कटा हुआ महसूस करते हैं। दूसरे यह इस बात को प्रभावित करता है कि अंतरराष्ट्रीय मीडिया तिब्बत के बारे में किस तरह से लिखता है- या, इस तरह से लिखता है,जैसा कि अक्सर होता नहींहै।
पेंथोक ने कहा, 'कवरेज सत्यापित और विश्वसनीय सूचनाओं पर आधारित होना चाहिए। भले ही मीडिया इन चीजों पर रिपोर्ट करना चाहता हो, हालांकि,अक्सर वे ऐसानहीं करते हैं।'

◆ अस्पतालों, चिकित्सा केंद्रों तक पहुंच पर प्रतिबंध के कारण तिब्बत में कोविड जनितमौतों में वृद्धि

theprint.in, २६ जनवरी, २०२३

ल्हासा (तिब्बत), २६ जनवरी (एएनआई) ।तिब्बत प्रेस की रिपोर्ट के अनुसार अस्पतालों और अन्य चिकित्सा केंद्रों तक पहुंच पर मौजूदा प्रतिबंधों के कारण कोविड मृत्यु दर में वृद्धि ने तिब्बतियों के जीवन को लगातार कठिन बना दिया है।

तिब्बतियों को चिकित्सा केंद्रों का लाभ उठाने की अनुमति नहीं हैऔर पूरी समस्या को गुपचुप तरीके से बाहरी दुनिया को कोई सूचना दिए बगैर नियंत्रित किया जा रहा है।

तिब्बत प्रेस ने बताया कि तिब्बती निर्मम चीनी शासन के साथ-साथ वर्तमान कोविड महामारी से भी अंतहीन पीड़ा और मृत्यु को सहन करते हैं।

रेडियो फ्री एशिया (आरएफए) से बात करने वाले सूत्रों के अनुसार, अस्पतालों और अन्य चिकित्सा केंद्रों तक पहुंच पर वर्तमान प्रतिबंधों के कारण चामडो प्रिफेक्चर के ड्रैगयाब काउंटी में दो स्थानीय सरकारी कर्मचारियों सहित चार व्यक्तियों की ०७ जनवरी को मृत्यु हो गई।

इसके अतिरिक्तकुछ स्रोतों के अनुसार, मृतकों को दाह संस्कार के लिए आसपास के जिलों से बड़ी संख्या में सिचुआन के सर्टा काउंटी में लारुंग गार बौद्ध अकादमी में ले जाया गया।

सूत्रों के मुताबिक, इस बीच चीन सरकार ने तिब्बत को चीन के अन्य हिस्सों के पर्यटकों के लिए फिर से खोल दिया है। तिब्बत प्रेस की रिपोर्ट के अनुसार, ल्हासा मेंअधिकारियों ने शहर के पर्यटन स्थलों में मुफ्त प्रवेश की घोषणा की है।

जब महामारी का प्रकोप हुआतो सरकार की शून्य कोविड नीति के परिणामस्वरूप कठोर, अनुचित उपाय किए गए और तिब्बती लोगों के जीवन को गंभीर रूप से खतरे में डाल दिया गया। तिब्बत प्रेस ने बताया कि इसका प्रकोप ०७ अगस्त-२०२२ को शुरू हुआ और इसके तुरंत बाद लॉकडाउन शुरू हो गया।

हमेशा की तरहचीन ने तिब्बत की स्थिति की गंभीरता का आकलन करने और इसके बारे में अधिक जानने का बहाना बनाकर पत्रकारों और अन्य पर्यवेक्षकों को तिब्बत में प्रवेश करने से रोक दिया।

सूचना का एकमात्र स्रोत चीनी मीडिया बच गया, जो निश्चित रूप से सबसे पक्षपाती चैनल है क्योंकि यह पूरी तरह से सरकार के आदेशों का अनुपालन करता है।

तिब्बत प्रेस ने बताया कि चीनी सरकार ने इस बात को प्रचारित करना सुनिश्चित किया कि कोरोना वायरस का प्रकोप तिब्बती क्षेत्र में उत्पन्न हुआ हैऔर यह तीसरी पीढ़ी का उप-संस्करण ओमिक्रॉन प्रतीत होता है। उन्होंने यहां तक कहा कि विशिष्ट संस्करणअभी तक चीन में कहीं नहीं देखागया है।

तिब्बती सूत्रों ने बताया कि दिसंबर की शुरुआत में चीनी अधिकारियों द्वारा बीमारी के प्रसार को रोकने के लिए डिज़ाइन किए गए कड़े लॉकडाउन के बादचीन के तिब्बती हिस्सों में कोविड जनितमौतें बढ़ी हैं।

तिब्बत में रहने वाले एक सूत्र के अनुसार, पूरे चीन में लंबे समय तक चले प्रदर्शनों के बाद०७ दिसंबर को शून्य-कोविड नीति मेंढील दी गई थीं, जिनमें तिब्बत की राजधानी ल्हासा में १०० से अधिक लोग मारे गए।

सूत्र के अनुसार, तिब्बत प्रेस की रिपोर्ट में कहा गया है कि ०२ जनवरी को अकेले मालड्रो गोंगकर में द्रिगुंग श्मशान में ६४मृतकों को जलाया गया है। इसके अलावा, ३० शवों का छेमोनलिंग श्मशान में, १७ शवों का सेरा श्मशान में, और अन्य १५ शवों का तोलेंग डेचेन में एक श्मशान में

अंतिम संस्कार किया गया।

अन्य स्रोतों ने बताया कि कोविडने पश्चिमी चीनी प्रांतों- सिचुआन, गांसु, किंघाई के न्गाबा, सांगचू, कार्देज़ और लिथांग- में तिब्बतियों के जीवन को लील लिया है। सिचुआन में न्गाबा के कीर्ति मठ में इतने शव ले जाए गए कि कुछ को गिद्धों को खाने के लिए छोड़ दिया गया।

सिचुआन के डर्ज काउंटी के एक तिब्बती निवासी के अनुसार, 'कोविड तिब्बत के हर कोने में घुस गया है।'तिब्बती व्यक्ति ने अधिकारियों की नजरों से बचने के लिए नाम न छापने की शर्त पर आरएफए कोयह बात बताई।

जनता पहले से ही चिंतित थी कि प्रतिबंधों में ढील के बाद चीन महामारी की प्रगति के बारे में जानकारी छिपा सकता है।२५ दिसंबर को चीन के राष्ट्रीय स्वास्थ्य आयोग ने भी घोषणा कर दी कि वह दैनिक कोविडमामलों की संख्या को प्रकाशित करना बंद कर देगा।

आरएफएकी रिपोर्ट के अनुसार, तिब्बत में चीनी अधिकारी स्थानीय श्मशानों में फोटो या वीडियो रिकॉर्डिंग लेने से रोक रहे हैं, ताकि क्षेत्र में बढ़ती कोविड जनितमौतों की खबर बाहरी दुनिया तक न पहुंच सके।

दिसंबर के पहले कुछ दिनों में अधिकारियों द्वारा बीमारी के प्रसार को रोकने के लिए लगाए गए लॉकडाउन के बादचीन के तिब्बती क्षेत्रों में मरने वालों की संख्या फिर से बढ़ गई है। सुरक्षा कारणों से नाम न छापने की शर्त पर बात करने वाले एक स्थानीय सूत्र के अनुसार, अब प्रतिदिन १५ से २० शवों को तिब्बती स्वायत्त क्षेत्र के द्रिगुंग के श्मशान और ल्हासा शहर के अन्य श्मशानों में ले जाया जाता है।

तिब्बती लोगों की स्थिति ऐसी हो गई है कि इसमें अंतरराष्ट्रीय सहायता की जरूरतहै। साथ ही वहां ऐसी क्रूर और अनुचित गतिविधियों को रोका जाना चाहिए। ऐसे में जब दुनिया के बाकी हिस्से कोविड के प्रकोप से उबर रहे हैं, तिब्बती ठीक होने कीबजाय बुनियादी सेवाओं की सुविधा पाने के लिए संघर्ष करना जारी रखे हुए हैं। **(एएनआई)**

◆ निर्वासन में रह रहे लोगों से संपर्क करने परचीनी अधिकारियों ने तिब्बती लेखक को हिरासत में लिया

चीन में तिब्बतियों को निशाना बनाने वाली कड़ी कार्रवाई में३० वर्षीय व्यक्ति को हिरासत में लिया गया

rfa.org, २७ जनवरी, २०२३

सूत्रों ने रेडियो फ्री एशिया को बताया कि कथित रूप से निर्वासन में रह रहे लोगों से संपर्क करने के आरोप में तिब्बत में चीनी अधिकारियों ने एक ३० वर्षीय तिब्बती लेखक और पूर्व शिक्षक को हिरासत में लिया है।

केवल पालगॉन के नाम से जाने जानेवालेलेखकको अगस्त-२०२२ में उसके घर सेगिरफ्तार किया गया था और तब से वह एकांत कैद में है। तिब्बत के अंदर के एक सूत्र ने आरएफए को बताया कि 'फिलहाल इस बात की कोई जानकारी नहीं है कि उसे कहां रखा जा रहा है।'

सूत्र ने सुरक्षा कारणों से नाम न छापने पर जोर देते हुए कहा, 'उनके परिवार के सदस्यों को परम पावन दलाई लामा की प्रार्थना करने के लिए निर्वासन में रह रहे लोगों सेसंपर्क करनेके अलावा उनकी गिरफ्तारी के बारे में कोईउचित कारण नहीं बताया गया।'

पालगॉन चीन के दक्षिण-पूर्वी किंघाई प्रांत के गोलोग तिब्बती स्वायत्त प्रिफेक्चर के निवासी हैं। वह प्रिफेक्चर के पेमा काउंटी में एक प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक थे, लेकिन बाद में उन्होंने अपनी नौकरीसे इस्तीफा दे दिया और एक स्वतंत्र लेखक के रूप में कार्य करने लगे थे।

तिब्बत के अंदर एक अन्य सूत्र ने आरएफएको बताया कि पालगॉन आमतौर पर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और ऑडियो चैट समूहों पर बहुत सक्रिय रहते है, जहां वह लिखते है और व्यस्त रहते हैं।

पिछले कुछ महीनों में आरएफएने व्यापक कार्रवाई में चीन द्वारा भिक्षुओं, लेखकों, युवा प्रदर्शनकारियों और अन्य तिब्बती हस्तियों की गिरफ्तारी की सूचना दी है। हिरासत में लिए गए लोगों को सजा सुनाए जाने से पहले महीनों तक अक्सर तनहाई कैद में रखा जाता है।

भारत स्थित तिब्बत नीति संस्थान के निदेशक दावा छेरिंग ने आरएफए को बताया कि गिरफ्तारी तिब्बतियों को बाहरी दुनिया से संवाद करने से रोकने के चीन के प्रयासों को दर्शाती है।

उन्होंने कहा, 'चीन सरकार नहीं चाहती कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय धर्म, संस्कृति और भाषा के मामले में तिब्बतियों पर लागू की जा रही कठोर नीतियों के बारे में जानें।'

तिब्बती सेंटर फॉर ह्यूमन राइट्स एंड डेमोक्रेसी में स्पेन स्थित शोधकर्ता सांगे क्याप ने कहा कि निर्वासन में रह रहे तिब्बतियोंसे संपर्क करने वालों की हिरासत 'दोनों को अलग करने का काम करती हैऔर परम पावन दलाई लामा और तिब्बत के अंदर के अन्य धार्मिक हस्तियों के प्रभाव को रोकने का प्रयास भी है,जिनका तिब्बती सम्मान करते हैं।'

आरएफएने पेमा काउंटी और गोलॉग प्रिफेक्चर में पुलिस से संपर्क किया, लेकिन वे इस पर टिप्पणी के लिए उपलब्ध नहीं थे।

◆ भारत-तिब्बत समन्वय संघ ने अपना दूसरा स्थापना दिवस मनाया

tibet.net, १७ जनवरी, २०२३

नई दिल्ली। मकर संक्रांति और लोहड़ी के शुभ अवसर परतिब्बत समर्थक समूह- भारत-तिब्बत समन्वय संघ (बीटीएसएस)-ने १४जनवरी २०२३ को अपना दूसरा स्थापना दिवसमनाया। भारत के विभिन्न राज्यों में बीटीएसएस के चैप्टरों ने बड़े आनंद और उत्साह के साथ तिब्बती भाइयों और बहनों के साथ इस दिन को मनाया। बीटीएसएस के पदाधिकारियों और सदस्यों ने पास केतिब्बती बस्तियों

और विभिन्न शहरों में तिब्बती शीतकालीन स्वेटर बाजार क्षेत्रों का दौरा किया। उन्होंने तिब्बती समुदाय के सदस्यों को स्कार्फ और मिठाइयां भेंट कींऔर इसशुभ अवसर पर खिचड़ी भंडारा आयोजित करभारतीयों और तिब्बतियों के बीच संबंधों को मजबूत करने के लिए अभिवादन का आदान-प्रदान किया। हरियाणा से कर्नाटक और गुजरात से असम तक बीटीएसएसने विभिन्न गतिविधियों और कार्यक्रमों के साथ इस दिन को मनाया।

दिल्ली में बीटीएसएस- उत्तरी क्षेत्र ने बीटीएसएस-उत्तरी क्षेत्र के महिला विंग कीअध्यक्ष श्रीमती संध्या सिंह के नेतृत्व में द्वारका सेक्टर- १७में इसदिन कोमनाया।उनके निमंत्रण परभारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ), नई दिल्ली के कार्यक्रम अधिकारी छोनी छेरिंग ने आईटीसीओ के प्रतिनिधि के तौर पर कार्यक्रम में भाग लिया। इस अवसर पर परिचयात्मक भाषण देते हुए श्रीमती संध्या सिंह ने बीटीएसएस के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई दी। उन्होंने संस्था के द्वितीय स्थापना दिवस पर सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को शुभकामनाएं दी। उन्होंने उस उद्देश्य को दोहराया जिसके लिए १४जनवरी २०२१ को मकर संक्रांति के शुभ अवसर पर संगठन की स्थापना की गई थी। संध्या सिंह के अनुसार,बीटीएसएस के उद्देश्य और लक्ष्यहैं १) भारत की सुरक्षा के लिए तिब्बत को चीन के अवैध कब्जे से मुक्त कराना, और २) महादेव शिव शंकर शंभु के मूल स्थान कैलाश-मानसरोवर को भी चीन केकब्जे से मुक्त कराना।

इस अवसर पर आईटीसीओ कार्यक्रम अधिकारी छोनी छेरिंग ने बीटीएसएस को उसकी दूसरी स्थापना दिवस पर बधाई दी। उन्होंने तिब्बत में सत्य और न्याय की लड़ाई में संगठन की कड़ी मेहनत और दृढ़ संकल्प की सराहना की। उन्होंने बीटीएसएस के सभी पदाधिकारियों और सदस्यों को तिब्बत के लिए उनके निरंतर समर्थन की अपेक्षा करते हुए उनके प्रयासों के लिए शुभकामनाएं दीं।

बीटीएसएस केमहिला विंग कीराष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती नामग्याल छेके, दिल्ली क्षेत्र के मुख्य समन्वयक रॉबिन शर्मा, उपाध्यक्ष रविकांत शर्मा और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भी इस अवसर पर सदस्यों को संबोधित किया। सदस्यों ने पूर्ण समर्पण के साथ काम करने और तिब्बत को चीन के दुष्ट चंगुल से मुक्त होने तक न रुकने का संकल्प लिया।

सदस्यों ने लोहड़ी और मकर संक्रांति के शुभ अवसर पर तिलकुट और मिठाई का आदान-प्रदान किया। छोटे बच्चों द्वारा एक भारतीय सांस्कृतिक नृत्य प्रस्तुत किया गया और उन बच्चों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए जिन्होंने बीटीएसएस स्थापना दिवस कार्यक्रम के तहतड्राइंग प्रतियोगिता में भाग लिया था।

स्थापना दिवस कार्यक्रम के बाद जी-२० देशों और विश्व के लिए भारत के सांस्कृतिक संदेश पर एक चर्चा सत्र का आयोजन किया गया। सत्र की मेजबानी बीटीएसएस- उत्तरी क्षेत्र केमहिला विंग कीउपाध्यक्ष श्रीमती पारुल गुप्ता द्वारा की गई थी। श्रीमती गुप्ता ने सदस्यों को जी-२० देशों और इसपर चर्चा के महत्व के बारे में जानकारी दी।

श्री रॉबिन शर्मा और श्री रविकांत शर्मा ने सदस्यों को जी-२० देशों और इसके वर्तमान अध्यक्ष पद परभारत की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में वसुधैव कुटुम्बकम- एक पृथ्वी, एक परिवार और एक भविष्य के अपने संदेश के साथ संबोधित किया।

इस अवसर पर बीटीएसएस-उत्तरी क्षेत्र ने आम जनता के लिए खिचड़ी भंडारा और कार्यक्रम में शामिल होने वाले सभी सदस्यों के लिए दोपहर के भोजन की व्यवस्था की थी।

बीटीएसएस के राष्ट्रीय सचिव (युवा) श्री तेजस चतुर्वेदी, प्रदेश उपाध्यक्ष (युवा) श्री रणवीर सिंह, वरिष्ठ समाजसेवी डॉ राजीव, डॉ दीपक और श्रीमती वंदना, जिला उपाध्यक्ष श्रीमती अश्विना गुप्ता, श्रीमती मंजुला, श्रीमती अंजना दहिया, श्रीमती सुषमा भंडारी, श्रीमती प्रीति मिश्रा, श्रीमती कनिष्का, श्रीमती साधना देवी, श्रीमती मनीषा शर्मा, श्री मोहम्मद तारिक, श्री अजीत दुबे, श्री हेमंत चौहान, श्री दीपक ठाकुर, श्री राकेश कुमार सिंह, श्री सौरभ दास और बीटीएसएस के अन्य सदस्य भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

❖ गोवा विश्वविद्यालय के छात्रों ने तिब्बतियों के इतिहास और संस्कृति का अध्ययन करने के लिए बायलाकुप्पे तिब्बती बस्ती का दौरा किया

tibet.net, ३०जनवरी, २०२३

बायलाकुप्पे (कर्नाटक)।गोवा विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग के छात्रों ने विभाग के प्रोफेसर जोआना कोल्हो की अध्यक्षता में मैसूर जिले के बाइलाकुप्पे स्थित तिब्बती बस्तियों का दौरा किया। २८ से २९ जनवरी २०२३ तक की अपनी दो दिवसीय यात्रा के दौरानउन्होंने वृद्धाश्रम, संभूता और टीसीवी स्कूल, ऑर्गेनिक रिसर्च ट्रेनिंग सेंटर, सेरा मठ, नामड्रोलिंग मठ और ताशी ल्हुन्पो मठ का दौरा किया।

लुगसुंग समदुप्लिंग और डेकी लार्सो तिब्बती बस्तियों के दो लेखाकारों ने प्रोफेसरऔर उनके उत्साही छात्रों का स्वागत किया।

छात्रों ने तिब्बतियों द्वारा बाइलाकुप्पे में भूमि की सफ़ाई करने को लेकर अपने जबरदस्त अनुभवों को सुनाया और स्थानीय लोगों के साथ बातचीत की। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि छात्र सांस्कृतिक और भौगोलिक दृष्टि से तिब्बत-भारत कीनिकटता से गहराई से परिचित हुए। उन्हें भारतीय आचार्यों द्वारा तिब्बत में बौद्ध धर्म की शुरुआत और वहां तिब्बती विद्वानों द्वारा इसके संरक्षणके बारे में शिक्षित किया गया। उन्हें तिब्बत परचीनी कम्युनिस्ट आक्रमण और तिब्बत के अंदर तिब्बतियों की धार्मिक रीति-रिवाजों पर विध्वंसक कार्रवाई से परिचित कराया गया। साथ ही निर्वासन में तिब्बत के धर्म और सांस्कृतिक पहचान के पुनरुद्धार के बारे में भी बताया गया।

सेरा मे मठाधीश भिक्षुगेशे ताशी छेरिंगने छात्रों का स्वागत किया और तिब्बत से भारत, भारत से ब्रिटेनऔर फिर वापस भारत की अपनी यात्रा के अनुभवों को बताया। भारत में वे वर्तमान में सेरा मठके भिक्षुओं कोबौद्ध धर्म के पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक शिक्षा संकाय- दोनों की शिक्षा देने में लगे हुए हैं।

विशेष रूप से ताशी ल्हुन्पो मठ मेंउन्होंने मठ के शिक्षकों के साथ औपचारिक बातचीत की। प्रो. जोआना कोएल्हो ने निर्वासन में तिब्बती समुदाय के साथ अपने पहले जुड़ाव के दिनों को याद किया जब डेपुंग लोसेलिंग मठ के साथ एसईई सीखने और अकादमिक प्रवचनों के आपसी आदान-प्रदान पर समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए थे। उन्होंने आशा व्यक्त की कि उनके छात्र तिब्बती लोगों की पीड़ा और आकांक्षाओं को व्यावहारिक और सैद्धांतिक जानकारी के आलोक में देखने और अध्ययन करने में सक्षम होंगे, जिसे वे इन कार्यक्रमों के माध्यम से आत्मसात कर सकते हैं।

ताशी ल्हुन्पो मठ के मुख्य प्रशासक खिलखंग रिनपोछे ने 'तिब्बत्स स्टोलेन चाइल्ड (तिब्बत का चोरी हुआ बच्चा)'नामक एक सांकेतिक स्मारिका भेंट की, जो चीनी कम्युनिस्ट सरकार द्वारा अपहरण किए गए दुनिया के सबसे कम उम्र के राजनीतिक कैदी और उनके प्रतिष्ठित पंचेन लामा के बारे में एक किताब है।

◆ आईटीएफएस के मैसूरु चैप्टर ने अपने दृष्टिकोण को सुदृढ़ किया

tibet.net, ३० जनवरी, २०२३

मैसूरु।भारत-तिब्बत मैत्री संघ (आईटीएफएस)की जड़ों को मजबूत करते हुए इसकेमैसूरु चैप्टर की स्थापना वर्ष २००३ में हुई थी। इसके तत्कालीन अध्यक्षग्रुप कैप्टन स्वर्गीय राजगोपालजी,सचिव श्री बी.सी. वीरराज उर्स, पदस्थ अध्यक्षश्री शिवराम डी.जे.,उपाध्यक्ष श्री लक्ष्मण गौड़ाबने थे। मैसुरु चैप्टर ने इस अवसर पर विद्यावर्धन प्रथम ग्रेड कॉलेज के साथ एक संयुक्त रूप से 'मुक्त तिब्बत-भारत सीमा सुरक्षा- एशिया में शांति' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया।

वीवीएफजी कॉलेज के प्राचार्य डॉ. एस. मणिगौड़ा ने संगोष्ठी में आए प्रतिनिधियों,कॉलेज के प्रतिष्ठित विद्वानों, संकाय सदस्यों, कर्मचारियोंऔर छात्रों का स्वागत किया।वीवीसंघ (नि.) के माननीय कोषाध्यक्ष श्री श्रीशैल रामनवरने अपनी शुरुआतीटिप्पणी में निर्वासित तिब्बती समुदायों से परिचित होने के अपने अनुभव, उनकी आकांक्षाओं और अपनी पहचान को बनाए रखने आनेवाली उनकी कठिनाइयों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने धर्मशाला की अपनी पिछली यात्राओं और वहांमहामहिम करमापा रिनपोछे सेउनकी अंतर्दृष्टि और रीति-रिवाजों पर उनसे सुने व्याख्यान पर चर्चा की।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रितपूर्व राजनयिक श्री रवि जोशीने लगातार तीन दशकों में चीन के आर्थिक विकास के बारे में बात की। श्री जोशी ने न केवल भारत में सेवा की है, बल्कि संयुक्त राष्ट्रके मिशनों में भी प्रमुख भूमिकाएं निभाई हैं। उन्होंने चीन द्वाराप्रति वर्ष १० प्रतिशत की वृद्धि को बनाए रखते हुए, राष्ट्रवाद से कम्युनिज्म की विचारधारा में प्रणालीगत परिवर्तन, बीजिंग में तियानमेन चौक पर विशाल प्रदर्शन के दौरान छात्रोंपर दमन और शी जिनपिंग के नेतृत्व में अपनी समुद्री शक्ति केप्रदर्शन को रेखांकित किया। जोशी ने कहा कि तिब्बत पर अपनी नाजायज पकड़ बनाने से लेकरअरुणाचल प्रदेश को दक्षिणी तिब्बत के रूप में दावा करके अपने नियंत्रण का विस्तार करने की नीयत से कम्युनिस्ट चीन की विस्तारवादी नीति का प्रमाण मिलता है जो पूरी तरह से उसकेअपने निहित स्वार्थों पर केंद्रित है।

कर्नल (सेवानिवृत्त)श्री सतीशने युद्ध के मोर्चे पर अपने अनुभव को याद किया और समुद्र और जमीन पर भारत की सीमा की बेहतर समझ बनाने के लिए एलओसी, एलएसी, अंतरराष्ट्रीय सीमा (आईबी), यूएवी, एनवीजी, पीएमएफ, सीआरपीएफऔर बीएसएफ जैसे संक्षिप्त शब्दों को परिभाषित किया। आईटीबीपी का जिक्र करते हुए कर्नल सतीश ने कहा कि हालांकि भारतीय क्षेत्र में चीनी सेना की घुसपैठ २०२० में गालवान की घटना से लेकर दिसंबर २०२२ में अरुणाचल प्रदेश में हाल की झड़पों तक अधिक आक्रामक रूप से उजागर हुई है।जबकि भौगोलिक और ऐतिहासिक रूप से चीन की सीमा भारत के साथ नहीं बल्कि तिब्बत के साथ लगतीहै। उन्होंने भारत में तिब्बती शरणार्थियों की उपस्थिति के महत्व और भारत की विविधता मेंएकता के ताने-बाने को समृद्ध करने में इसके योगदान पर प्रकाश डाला।

बेंगलुरु में केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के मुख्य प्रतिनिधि अधिकारी जिग्मे सुल्त्रिमने इस कार्यक्रम के आयोजन के लिए विद्यावर्द्धक फर्स्ट ग्रेड कॉलेज और आईटीएफएस मैसूरु के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने इन पहलों की सराहना करते हुए कहा कि भारतीय युवाओं के युवा दिमाग की सेवा को लंबे समय तक यह सोचने और विचार करने की सामग्री प्रदान करेगाकि भारतीय प्राचीन ज्ञान कितनी ऊंचाई तक पहुंचा और कई चुनौतियों के बावजूद तिब्बती लोगों द्वारा इसे कितनी अच्छी तरह संरक्षित किया गया है।

संगोष्ठी के अध्यक्ष श्री शिवराम डी.जे. ने इस आयोजन के समग्र उद्देश्य को रेखांकित किया और आशा व्यक्त की कि संकाय के शिक्षकों और छात्रों को इस आयोजन से अत्यधिक लाभ हुआ होगा और तिब्बत के साथ भारत के संबंधों के बारे में मन में कई प्रश्न उठे होंगे। उन्होंने आगे कहा कि इससे इस बात पर और अधिक स्पष्टता आएगी कि किस प्रकार अपने पितृभूमि तिब्बत में लौटने की तिब्बतियोंकी आशाओं का समर्थन करने के लिए भारतीय लोगों को तिब्बती लोगों के प्रति अपने दृष्टिकोण को साफ करना चाहिए। उन्होंने श्री निरंजन उमापति को इस संगोष्ठी के सफल संचालन के लिए बधाई दी और आने वाले महीनों में मैसूरु और बेंगलुरु के अन्य संस्थानों में भी इस तरह के और आयोजनों की उम्मीद जताई।

सेमिनार में एम.ए. पाठ्यक्रम के ५०० से अधिक छात्रों और ५० संकाय सदस्यों ने भाग लिया। अन्य विशिष्ट अतिथियों के अलावाहुनसुरु केटीएसओ सुश्री तेनज़िन धदोन, शेनफेन इंस्टीट्यूट मैसूरु के निदेशक गेशे सोनम फुंटसोकने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया। संगोष्ठी के समापन के बादविशेष रूप सेमैसूरु क्षेत्र में भविष्य केकार्यक्रमों, समारोहों और पहलों की योजना बनाने के लिए आईटीएफएस मैसूरु चैप्टर की आंतरिक बैठक हुई।

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Tashi Dekyi
Deputy Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अभार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षों से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीचे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

ताशी देकि
उप–समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पताः भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
फोनः 011–29830578
ई–मेलः indiatibet7@gmail.com , coordinator@indiatibet.net

January, 2023, Years: 44 Issue: 01 Regd No. : RNI 34636-79

सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने कोलकाता के साल्ट लेक में 'तिब्बत में मानवाधिकारों के उल्लंघन' विषयक संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित किया

गोवा विश्वविद्यालय के छात्रों ने तिब्बतियों के इतिहास और संस्कृति का अध्ययन करने के लिए बायलाकुप्पे तिब्बती बस्ती का दौरा किया